नवाचार से समृद्धि



प्रो. (डॉ.) विवेक कुमार त्रिपाठी
डॉ. वी. के. कनौजिया
डॉ. भूपेन्द्र कुमार सिंह
डॉ. विनोद प्रकाश

प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर - 2

नवाचार से समृद्धि

प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर–2

संरक्षक

डा. संजीव गुप्ता
कुलपति

संकलन एवं सम्पादन

प्रो. (डॉ.) विवेक कुमार त्रिपाठी, निदेशक प्रसार एवं अधिष्ठाता, उद्यान संकाय
डॉ. वी. के. कनौजिया, नोडल अधिकारी, आर.के.वी.वाई.
डॉ. भूपेन्द्र कुमार सिंह, प्रभारी अधिकारी, के.वी.के., फर्रुखाबाद
डॉ. विनोद प्रकाश, प्रभारी अधिकारी, के.वी.के., फिरोजाबाद

तकनीकी सहयोग

समस्त कृषि विज्ञान केंद्र, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

प्रकाशन : 2026

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।

सन्दर्भ :

डॉ. विवेक कुमार त्रिपाठी, डा. वी. के. कनौजिया, डॉ. भूपेन्द्र कुमार सिंह एवं डा. विनोद प्रकाश, 2026, नवाचार से समृद्धि, प्रसार निदेशालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।

प्रकाशकः

प्रसार निदेशालय
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।

डॉ. संजीव गुप्ता
कुलपति

चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

संदेश



कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था, ग्रामीण आजीविका और खाद्य सुरक्षा का आधार है। बदलते जलवायु परिदृश्य, प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित खाद्य की बढ़ती मांग के बीच कृषि क्षेत्र के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान केवल प्रयोगशालाओं में विकसित तकनीकों से नहीं, बल्कि किसानों के अनुभव, स्थानीय ज्ञान, रचनात्मक सोच और नवाचारों के समन्वय से ही संभव है।

हमारे किसान सदियों से परिस्थितियों के अनुरूप कृषि पद्धतियों में सुधार करते आए हैं। सीमित संसाधनों का कुशल उपयोग, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से कृषि उपकरणों का निर्माण, फसल विविधीकरण, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, जैविक एवं प्राकृतिक कृषि पद्धतियों का प्रयोग तथा मूल्य संवर्धन जैसे अनेक क्षेत्रों में किसानों ने उल्लेखनीय नवाचार किए हैं। ये नवाचार न केवल उनकी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करते हैं, बल्कि अन्य किसानों के लिए भी अनुकरणीय और उपयोगी मॉडल प्रस्तुत करते हैं।

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर का प्रमुख दायित्व कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के माध्यम से किसानों की आय, उत्पादकता और जीवन-स्तर में सुधार लाना है। इस दिशा में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र निरंतर किसानों के साथ संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को समझते हैं, स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप तकनीकी समाधान विकसित करते हैं और सफल प्रयोगों को व्यापक स्तर पर प्रसारित करते हैं। किसान नवाचारों का दस्तावेजीकरण इसी प्रयास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

प्रस्तुत पुस्तक "नवाचार से समृद्धि" में वैज्ञानिक कृषि तकनीकों के साथ-साथ प्रगतिशील किसानों द्वारा अपनाए गए सफल नवाचारों का संकलन किया गया है। इसका उद्देश्य किसानों के अनुभवों और उपलब्धियों को पहचान देना, उन्हें संरक्षित करना तथा अन्य कृषकों तक सरल और उपयोगी रूप में पहुँचाना है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक में संकलित नवाचार किसानों, कृषि विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों, प्रसार कार्यकर्ताओं और नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री सिद्ध होंगे।

कृषि विकास को अधिक समावेशी, टिकाऊ और लाभकारी बनाने के लिए किसान, वैज्ञानिक, प्रसार कार्यकर्ता, उद्यमी और विभिन्न संस्थाओं के बीच निरंतर सहयोग आवश्यक है। किसानों के स्थानीय ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़कर हम ऐसी कृषि व्यवस्था विकसित कर सकते हैं, जो उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ मृदा, जल और जैव विविधता का संरक्षण भी करे। इस पुस्तक के माध्यम से विश्वविद्यालय ने किसानों की सृजनशीलता और आत्मनिर्भरता को सम्मानित करने का सराहनीय प्रयास किया है।

मैं इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए संकलन एवं सम्पादन मण्डल, विश्वविद्यालय के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों, तकनीकी सहयोगियों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह पुस्तक कृषक समुदाय में नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करेगी और कृषि क्षेत्र में ज्ञान के आदान-प्रदान को नई गति प्रदान करेगी।

कृषक नवाचारों का यह संकलन हमारे किसानों की क्षमता, परिश्रम और दूरदृष्टि का प्रमाण है। विश्वविद्यालय भविष्य में भी किसानों के साथ मिलकर कृषि विकास की नई संभावनाओं को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा।

(संजीव गुप्ता)

प्रो. (डॉ.) विवेक कुमार तिपाठी
निदेशक प्रसार

प्रसार निदेशालय
चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर

प्राक्कथन



कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला का महत्वपूर्ण आधार है। उत्तर प्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्य में कृषि क्षेत्र का महत्व और भी अधिक है, जहाँ बड़ी संख्या में कृषक परिवार प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं इससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर हैं। आज कृषि में नवाचार की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल कृषि, ड्रोन तकनीक, सटीक कृषि, मौसम आधारित कृषि परामर्श, संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, फसलोपरांत प्रबंधन एवं मूल्य संवर्धन जैसी आधुनिक तकनीकें कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ संसाधनों के कुशल उपयोग और खेती की लागत कम करने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। इसी प्रकार, पशुपालन, बागवानी, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन तथा कृषि आधारित उद्यमिता को अपनाकर कृषक अपनी आय के स्रोतों में विविधता ला सकते हैं।

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर, कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा के माध्यम से प्रदेश के किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकों को पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय के अधीन संचालित १५ कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों, कृषि प्रसार कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण, प्रदर्शन, कृषक गोष्ठियों तथा जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार एवं अन्य संबंधित संस्थाओं के सहयोग से संचालित विभिन्न कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों की तकनीकी क्षमता विकसित करना, कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार करना, लागत को युक्तिसंगत बनाना तथा कृषि को अधिक लाभकारी एवं टिकाऊ बनाना है।

इसी क्रम में "नवाचार से समृद्धि" का प्रकाशन किसानों द्वारा अपनाई जा रही नवीन तकनीकों, सफल कृषि पद्धतियों, अनुभवों एवं उद्यमशील प्रयासों को संकलित कर व्यापक स्तर पर प्रसारित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस प्रकाशन का उद्देश्य केवल नवीन कृषि तकनीकों की जानकारी उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि सफल कृषकों के अनुभवों से अन्य किसानों को प्रेरित करना, स्थानीय स्तर पर विकसित नवाचारों को पहचान प्रदान करना तथा कृषि में वैज्ञानिक सोच एवं उद्यमशीलता को बढ़ावा देना भी है। मेरा विश्वास है कि किसानों के व्यावहारिक अनुभवों और वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच यह संवाद कृषि विकास की नई संभावनाओं को साकार करने में सहायक होगा।

मुझे आशा है कि यह प्रकाशन 'सशक्त किसानःआत्मनिर्भर भारत' की भावना को साकार करने तथा प्रदेश में समावेशी, टिकाऊ एवं नवाचार-आधारित कृषि विकास को गति देने में योगदान देगा। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्रदान करने हेतु मैं विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही, इस पुस्तिका के निर्माण में योगदान देने वाले सभी कृषि वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञों, प्रसार कार्यकर्ताओं एवं कृषक बन्धुओं का भी अभिनंदन करता हूँ, जिनके अनुभवों और प्रयासों से यह पहल सार्थक बनी है।

(विवेक कुमार त्रिपाठी)

अनुक्रमणिका

1.	डेयरी फार्मिंग से आर्थिक समृद्वि श्री महेश चन्द्र फिरोजाबाद	1
2.	पशुपालन एवं चारा उत्पादन से आय में वृद्वि श्री रंजीत सिंह फिरोजाबाद	3
3.	फलोउद्यान से आर्थिक उन्नति श्री देवी दयाल फिरोजाबाद	5
4.	मटका लौकी के साथ गेंदा उत्पादन श्री लोकेश कुमार फिरोजाबाद	7
5.	जैविक काली हल्दी द्वारा आर्थिक समृद्वि श्री रघुवीर सिंह फिरोजाबाद	9
6.	मशरूम उत्पादन से उन्नति कु. मछला वर्मा फिरोजाबाद	11
7.	सब्जी एवं आलू उत्पादक किसानों के लिए "The Soil Brothers" स्टार्टअप की पहल श्री अभय प्रताप सिंह फर्रूखाबाद	13
8.	पारम्परिक खेती से हटकर ड्रैगन फ्रूट (कमलम) को बनाया समृद्धि का नया रास्ता श्री पकंज कुमार गंगवार	15
9.	गन्ने की खेती और देशी गुड़ से समृद्धि का नया रास्ता श्री हिमांशू गंगवार फर्रूखाबाद	17
10.	महिला स्वयं सहायता समूह/एफ.पी.ओ. के माध्यम से आय में वृद्धि श्रीमती नारायणी देवी फर्रूखाबाद	19
11.	खेती के साथ पशुपालन से आय वृद्धि श्री यतेन्द्र सिंह फर्रूखाबाद	21
12.	फसल चक्र एवं सब्जी उत्पादन द्वारा आय में वृद्धि श्री प्रताप सिंह फर्रूखाबाद	23
13.	खेती के साथ–साथ सिलाई व गृह वाटिका आय वृद्धि का साधन श्रीमती श्यामेन्द्री कन्नौज	25
14.	खेती के साथ–साथ मधुमक्खी पालन आय का उत्तम श्रोत श्री अलोक कुमार कन्नौज	27

15.. खेती के साथ पशुपालन आय वृद्धि का उत्तम साधन 29
श्रीमती स्नेहलता कन्नौज

16. कृषि एवं पशुपालन द्वारा जीवन यापन 31
श्री नरेन्द्र सिंह लखीमपुर खीरी

17. कृषि एवं पशुपालन द्वारा आय में बढ़ोत्तरी 33
श्री दिनेश कुमार लखीमपुर खीरी

18. एकीकृत फसल पद्धति द्वारा आय में बढ़ोत्तरी 35
श्री अतुल रस्तोगी लखीमपुर खीरी

19. कृषक महिला कालिन्द्री राठौर ने खेतों से बनाई अलग पहचान 36
श्रीमती कालिन्द्री राठौर लखीमपुर खीरी

20. खेती में नवाचार से आय वृद्धि 38
श्री रईस अहमद लखीमपुर खीरी

21. वर्मी कम्पोस्टिंग–आय का साधन 40
श्री रामनरेश लखीमपुर खीरी

22. खेती के साथ बकरी पालन आय वृद्धि का साधन 42
श्रीमती आशा देवी हरदोइ

23. खेती के साथ पशुपालन : आय का उत्तम स्रोत 44
श्रीमती फूलमती हरदोई

24. खेती के साथ मधुमक्खी पालन समृद्धि का आधार 46
श्रीमती मधू सिंह हरदोई

25. खेती के साथ पशुपालन : आय वृद्धि का साधन 48
श्रीमती राजरानी हरदोई

26. खेती में सब्जी उत्पादन समृद्धि का आधार 50
श्रीमती राजरानी हरदोई

27. मुर्गी पालन आय वृद्धि का स्रोत 52
श्रीमती सुनीता पाल कासगंज

28. सब्जी उत्पादन द्वारा कृषक आय में वृद्धि 54
श्रीमती माधुरी कासगंज

29. एकीकृत कृषि प्रणाली/कुशल एवं लाभकारी कृषि का वैज्ञानिक मॉडल 56
श्री हरी सिंह कासगंज

30. आत्मनिर्भरता की नई राहः एकीकृत प्राकृतिक खेती और पशुपालन से आर्थिक क्रांति 58
श्री केहरी सिंह कासगंज

31. फसल चक्र एवं सहफसली खेती के माध्यम से उत्पादन, उत्पादकता एवं कृषक 61
आय में वृद्धि
श्री गणेश सिंह कासगंज

32. बरसात में तरबूज उगाकर किसान ने खोली प्रगति की नई राह 63
श्री सतीश चन्द्र कासगंज

33. परंपरागत मक्का–धान से सब्जी उत्पादन की ओर बढ़े कदम, बढ़ी खेती की लाभप्रदता 65
श्री होडिल सिंह कासगंज

34. समेकित फसल विविधीकरण से आय में वृद्धि 67
श्री लल्लू रायबरेली

35. मुर्रा भैंस पालन एवं उन्नत संतति संवर्धन बना आय का साधन 70
श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह रायबरेली

36. बकरी पालन से समृद्धि एवं आय में वृद्धि 72
मो. अनिल अहमद खान रायबरेली

37. बेसहारा गायों का सदुपयोग कर बना समृद्ध किसान 74
श्री शिवनाथ कानपुर देहात

38. प्राकृतिक खेती से मिली सफलता एवं खेती में आय की वृद्धि 76
श्री रमाकांत त्रिपाठी फतेहपुर

39. खरीफ प्याज से दोहरी कमाई – नर्सरी और उत्पादन एक साथ 78
श्रीमती कान्ति देवी

40. फसल चक्र सब्जी मटर–गेहूं अपनाकर खेती से मिली सफलता 80
श्री राकेश कुमार शुक्ला फतेहपुर

41. खरीफ प्याज एवं विविधीकरण से बढी कृषक की आय एवं आर्थिक समृद्वि 82
श्री राम सिंह पटेल (शशि भूसन सिंह) फतेहपुर

42. संतुलित उर्वरकों का प्रयोग, रोग व कीट प्रबन्धन से आय में वृद्धि 84
श्री अमरनाथ कन्नौज

43. परम्परागत खेती के साथ गेहूँ, धान व आलू की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग 86
श्री भगवान दीन कन्नौज

44. ड्रोन द्वारा पोषक तत्वों एवं कीटनाशकों का छिड़काव एवं आर्थिक समृद्धि 88
श्रीमती सविता यादव मैनपुरी

45. ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं कीटनाशकों का छिड़काव 90
श्रीमती देवकी राजपूत मैनपुरी

46. वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन एवं जैविक खेती 92
श्री राम औतार लोधी मैनपुरी

47. पशुपालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन 94
श्री उदयवीर सिंह मैनपुरी

48. कृषि विविधीकरण एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन 96
श्री देवन्द्र सिंह मैनपुरी

49. ड्रोन द्वारा पोषक तत्वो एवं कीटनाशकों का छिड़काव 98
श्रीमती सुनीता कश्यप मैनपुरी

50. पोषण वाटिका से पोषण सुरक्षा एवं अतिरिक्त आय 100
श्रीमती सुदामा देवी रायबरेली

51. रंगीला महिला समूह ने मसाला प्रसंस्करण से बढ़ाई आय और आत्मनिर्भरता 103

डेयरी फार्मिंग से आर्थिक समृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री महेश चन्द्र
पिता का नाम	:	स्व0 श्री फौरन सिंह
ग्राम	:	नगला चिरोंजी
ब्लाक	:	फिरोजाबाद
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	6395987633

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरणः

श्री महेश चन्द्र 2024 के पूर्व में इनके पास एक एकड़ खेती के साथ–साथ 1 गाय तथा 1 भेंस का पालन करते थे। जिससे इनकी आय कम थी एवं परिवार का भरण पोषण करना कठिन था। जुलाई 2024 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद में व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग पर प्रशिक्षण लिया जिसमे पशु अहार, पशु प्रबंधन, अवास प्रबंधन, नस्ल प्रबंधन, बॉझपन एवं बीमारियों का प्रबंधन प्रमुख विषय थे। श्री महेश चन्द्र ने जुलाई 2024 से कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद के तकनीकी सहयोग से डेयरी फार्मिंग का व्यवसाय 06 दुधारू जानवरों (04 मुर्रा भेंस एवं 02 जर्सी गाय) के साथ प्रारंभ किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरणः

श्री महेश चंद्र के द्वारा जब उन्नत तकनीकी अपनाने के साथ डेयरी फार्मिंग का कार्य प्रारम्भ किए तबसे उनकी आय में दिन पर दिन वृद्धि देखने को मिली। पहले उनकी आमदनी प्रतिदिन कुल रू0 आय 700 तथा शुद्ध आय रुपया 320 थी वह बढ़कर कुल आय रू0 4680 तथा शुद्ध आय रू0 2480 रुपये हो गई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तारः

श्री महेश चन्द्र ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढोतरी करने के उपरान्त आस–पास के लगभग 17 कृषकों को डेयरी व्यवसाय हेतु प्रेरित किया। जिससे आस–पास के किसान लाभान्वित हुये।

कृषक प्रतिक्रियाः

श्री महेश चन्द्र अपने परिवार के साथ एक सफल डेयरी फार्मिंग कर रहे हैं। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का भरण पोषण सही चल रहा है और इसके साथ–साथ एक एकड़ खेती से भी अच्छा लाभ प्राप्त कर रहे है। परिवार के सभी सदस्य उनसे खुश है।



पशुपालन एवं चारा उत्पादन से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री रंजीत सिंह
पिता का नाम	:	स्व. श्री साहू लाल
ग्राम	:	नगला हंसी
ब्लाक	:	फिरोजाबाद
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9927429237

श्री रंजीत सिंह पुत्र स्व. श्री साहू लाल बी.एस.सी. कृषि करने के साथ–साथ खेती व पशुपालन में रूचि होने के कारण सहयोग कर रहे थे। लेकिन परंपरागत तरीके से खेती व पशुपालन करने से अच्छा लाभ नहीं हो रहा था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण

श्री रंजीत सिंह ने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से मिलकर डेयरी फार्मिंग का प्रशिक्षण वर्ष 2023 में प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरान्त पशुओं के लिये गुणवत्ता युक्त हरे चारे हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र से नैपियर एवं गिन्नी घास की रूट स्लिप्स उपलब्ध कराई गई। जिसे अपने प्रक्षेत्र पर 0.2 एकड़ क्षेत्रफल पर रोपित किया जिससे पशुओं के लिये पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त हरा चारा प्राप्त हुआ, जिससे पशु स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन अच्छा हुआ और लागत में कमी के साथ–साथ शुद्ध आय में बढ़ोतरी हुई।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

डेयरी फार्मिंग तकनीक और नेपियर व गिन्नी घास रोपण के बाद जहाँ पूर्व के वर्षों में 3 गायों से 25 लीटर दूध उत्पादन और ₹ 520 खर्च के साथ ₹ 605 की शुद्ध आय प्राप्त हो रहा था, वहीं नई तकनीक अपनाने के उपरान्त 2 गायों से ₹ 850 और 3 भैंसों से ₹ 1460 की शुद्ध आय प्राप्त हुई, जिससे कुल मिलाकर आय–व्यय अनुपात में सुधार के साथ–साथ शुद्ध आय में 281.81% की वृद्धि दर्ज की गई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री रंजीत सिंह की आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढोतरी से प्रेरित होकर आस–पास के लगभग 10 कृषकों ने इस तकनीक को अपनाया जिनको नैपियर एवं गिन्नी घास की रूट स्लिप्स उपलब्ध कराई गई। जिससे पशुओं के लिये पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त हरा चारा प्राप्त हुआ,

जिससे पशु स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन अच्छा हुआ और लागत में कमी के साथ–साथ शुद्ध आय में बढ़ोतरी हुई।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री रंजीत सिंह अपने परिवार के साथ एक डेयरी फार्मिंग कर रहे है। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का पालन पोषण सही चल रहा है इसके अतिरिक्त 0.2 एकड़ में नैपियर एवं गिन्नी घास चारे के रूप में उगा रहे हैं। जो पशुओं को वर्षभर हरा चारा प्रदान कर रहा है।









फलोउद्यान से आर्थिक उन्नति



कृषक का नाम	:	श्री देवी दयाल
पिता का नाम	:	श्री चरन सिंह
ग्राम	:	कंथरी
ब्लाक	:	अरांव
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9557235743

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण

श्री देवी दयाल पुत्र श्री चरन सिंह बी टैक, एमएस. सी. बायोटैक तक अध्ययन करने के पश्चात पिताजी को खेती मे हो रहे निरन्तर घाटे के कारण वह खेती करनें से मुँह मोड़ने लगे थे खेती में फायदा नहीं हो रहा था तथा उनकी कुल वार्षिक आय बहुत कम थी। इसके बाद मैं कृषि विश्वविद्यालय कानपुर के विभागाध्यक्ष, उद्यान विभाग डा. वी.के. त्रिपाठी से मिला। उन्होंने मुझे ड्रैगन फल एवं ऐपल बेर रोपित करने के लिए प्रेरित किया तथा विस्तार से जानकारी दी और कहा कि पास के कृषि विज्ञान केंद्र एवं जिला उद्यान अधिकारी से मिलकर इसके लिए सरकारी अनुदान प्राप्त कर सकते हैं। इसके बाद मैं कृषि विज्ञान केन्द्र पर गया और वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी एवं फलोउद्यान प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मैं जिला उद्यान अधिकारी से मिला तथा जिला फिरोजाबाद के लिये नवीनतम एक एकड ड्रैगन फ्रुट का बाग एवं एक एकड़ एप्पल बेर का बाग अपने प्रक्षेत्र पर लगाया जिससे खेती में आर्थिक लाभ होने लगा तथा पारिवारिक स्थिति में सुधार हुआ। जिला फिरोजाबाद के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा ड्रैगन फ्रुट को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया गया है तथा इस वर्ष उद्यान विभाग द्वारा 3 X 3 मीटर की स्पेसिंग में ड्रैगन फ्रुट लगाने पर किसानों को अनुमन्य लागत 125000 का 40 प्रतिशत अधिकतम अनुदान रू0 50000 प्रति हैक्टेयर तीन वर्षों में 60:20:20 के अनुपात में दिया गया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

तकनीकी हस्तान्तरण के अंतर्गत परंपरागत फसलों (बाजरा, गेहूं और आलू) के स्थान पर उच्च मूल्य वाली व्यावसायिक फसल (ड्रैगन फ्रूट) के समावेष से किसान की कुल शुद्ध आय में ₹ 1,69,375.00 से बढ़कर ₹ 2,25,725.0 तक की वृद्धि दर्ज की गई है, जिससे कुल आय वृद्धि प्रतिशत 133.26% प्राप्त हुआ है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री देवी दयाल ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढोतरी करने के साथ ही अपने गांव एवं आस–पास गांव के लगभग 22 कृषकों द्वारा 300 बीघा क्षेत्रफल में एप्पल बेर एवं ड्रैगन फ्रुट के बाग लगवाए हैं तथा खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे है। जिससे किसानों की आय में लगभग दो गुना वृद्धि हुयी है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री देवी दयाल अपने परिवार के साथ एक सफल बागवानी करके फल उत्पादन कर रहे है तथा इनकी आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। परिवार का पालन पोषण, शिक्षा एवं अर्थिक स्तिर में सुधार हुआ हैं तथा इसके साथ–साथ 5 एकड़ भूमि से अच्छा लाभ कमा रहे है।









मटका लौकी के साथ गेंदा उत्पादन



कृषक का नाम	:	श्री लोकेश कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री राजेन्द्र सिंह
ग्राम	:	नगला राधे
ब्लाक	:	मदनपुर
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9457026748

कृषक द्वारा अपनायी गयी कृषि तकनीक (2025–26)–मटका लौकी के साथ गेंदा उत्पादन

श्री लोकेश कुमार पिता श्री राजेन्द्र सिंह ग्राम–नगला राधे, विकास खण्ड–मदनपुर पूर्व में पारम्परिक तरीके से सब्जियों व फूलों की खेती करते थे। आमदनी कम होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। तत्पश्चात् वर्ष 2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण–कृषि विज्ञान केन्द्र, हजरतपुर के वैज्ञानिकों से सम्पर्क हुआ। केन्द्र के वैज्ञानिकों से सब्जी एवं पुष्प उत्पादन की तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर मटके में लौकी के बीजों को जमाकर मचान विधि से मटका लौकी उत्पादन प्रारम्भ किया, जिससे गुणवत्तायुक्त लौकी का उत्पादन अगेती हुआ। बाजार में लौकी का भाव अच्छा मिलने से मुनाफा अच्छा हुआ, साथ ही बाजार मॉग के अनुसार उन्होंने गेंदे की खेती भी प्रारम्भ की। वैज्ञानिक के सहयोग से मटका लौकी ब्रॉड को जनपद में विशेष पहचान मिली जिसके लिये जनपद व राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया।









अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री लोकेश कुमार को अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढोतरी एवं विशेष पहचान से प्रेरित होकर आस–पास के लगभग 10 कृषकों ने मटका लौकी तकनीक को अपनाया। इसके साथ ही गेंदा उत्पादन क्षेत्र में भी विस्तार हुआ जिससे किसानों की लौकी एवं गेंदा उत्पादन एवं गुणवत्ता अच्छी होने से बाजार भाव अच्छा मिला और शुद्ध आय में बढ़ोतरी हुई।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री लोकेश कुमार आज जनपद के एक सफल मटका लौकी व गेंदा उत्पादक किसान है। जनपद व प्रदेश स्तर पर इनकी मटका लौकी ब्रांड की विशेष पहचान है। इनके मटका लौकी की जनपद विशेष माँग रहती है। जनपद के किसानों, अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों द्वारा इनके इस कार्य की विशेष सराहना की जाती है।

जैविक काली हल्दी द्वारा आर्थिक समृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री रघुवीर सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री उजागर सिंह
ग्राम	:	नगला पऊलाल, असुआ
ब्लाक	:	शिकोहाबाद
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9457103737

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण

श्री रघुवीर सिंह ग्राम–नगला पऊलाल, विकास खण्ड–शिकोहाबाद के रहने वाले हैं। इनके पास तीन एकड़ कृषि योग्य जमीन है जिसमें पारंपरिक खेती में धान, गेहूँ, आलू उगाते थे। सन् 2023 से पहले यह अपनी खेती से अधिक लाभ नहीं पा रहे थे तथा खेती में रासायनिक उर्वरक एवं रासायनिक दवाओं में अधिक खर्च हो रहा था, जिससे शुद्ध लाभ कम मिल रहा था। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वर्ष 2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हजरतपुर, फिरोजाबाद के सम्पर्क में आये। वहां पर केन्द्र के वैज्ञानिकों से मिले तथा जैविक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त की। जैविक खेती से प्रेरित होकर सन् 2023 से अपनी पूरी जमीन में आलू, मटर, अरबी, गाजर, मूली, चुकन्दर, शकरकन्द, हल्दी, गन्ना, धान एवं गेहूँ जैविक तरीके से कर रहे हैं। इसके साथ–साथ अपनी फसलों में वृक्षा आयुर्वेद विधि से बने हर्बल कुनाव जल (कुणप जल) को पलेवा एवं सिंचाई जल के साथ प्रयोग कर रहा हैं जिससे फसलें अधिक पैदावार व गुणवक्ता युक्त पैदा हो रही है। जैविक हल्दी से जैविक हल्दी पाउडर, काली हल्दी तथा कच्ची हल्दी का अचार बनाकर स्थानीय बाजार में बेच रहे हैं और अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। इनके पास चार गाय है जिनके माध्यम से जैविक खेती कर रहे हैं, जिसके कारण उत्पादों का बाजार भाव अधिक मिल रहा है, जैविक खेती करने के उपरान्त अपने खेतों में रासायनिक उर्वरक एवं रासायनिक दवाओं का प्रयोग पूर्णतः बंद कर दिया। जिससे शुद्ध लाभ में बढोत्तरी हुई।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त किसान की आय और लाभ में अत्यधिक वृद्धि हुई है। परंपरागत फसलों (बाजरा 3.0 एकड़, गेहूँ 1.0 एकड़ तथा आलू 1.0 एकड़) की खेती से कुल शुद्ध आय ₹ 87,095.00 थी। जबकि तकनीकी के उपरान्त बाजरा (2.0 एकड़), गेहूँ (1.0 एकड़) और आलू (1.0 एकड़) के साथ–साथ 1.0 एकड़ में जैविक काली हल्दी की आधुनिक खेती शुरू करने से कुल

शुद्ध आय बढ़कर ₹ 6,98,090.00 हो गई, जिसमें अकेले जैविक काली हल्दी से ₹ 6,25,000.0 का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इसके परिणामस्वरूप, कुल शुद्ध आय में 801.5% की भारी वृद्धि दर्ज की गई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री रघुवीर सिंह ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढोतरी करने के उपरान्त अपने गांव एवं आस–पास गांव के लगभग 12 कृषकों को जैविक खेती एवं जैविक काली हल्दी का उत्पादन शुरू कराया और इन्होंने लगभग 1.0 एकड़ में जैविक हल्दी का उत्पाद कर हल्दी का पाउडर बनाकर 400 रू प्रति कि.ग्रा. की दर से स्थानीय बाजार एवं विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी कार्यालय में जाकर अपने उत्पाद की बिक्री कर अपनी आय में वृद्धि की है जिससे उनके आर्थिक जीवन स्तर में सुधार हुआ।

कृषक प्रतिक्रिया

जैविक काली हल्दी का उत्पादन करने के पश्चात श्री रघुवीर सिंह की आय में बढ़ोतरी हुई और इसके साथ–साथ जीवन स्तर एवं तकनीकी खेती की ओर रूचि बढ़ती गई। इस खेती के माध्यम से इन्होंने अपने ग्राम के कृषकों को तकनीकी ज्ञान देकर उन्हें भी जैविक खेती के लिये प्रेरित किया जिससे वह भी इस खेती की ओर आकर्षित हुये जिससे उनकी आय में वृद्धि से उनके जीवन स्तर में सुधार आ रहा है।





मशरूम उत्पादन से उन्नति



कृषक का नाम	:	कु. मछला वर्मा
पिता/पति का नाम	:	श्री मान सिंह
ग्राम	:	नगला दया
ब्लाक	:	फिरोजाबाद
जनपद	:	फिरोजाबाद
मोबाइल नम्बर	:	8273289792

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण का विस्तृत विवरण

कु0 मछला वर्मा पुत्री श्री मान सिंह ने बी.ए. करने के उपरान्त बेरोजगार होने के कारण 2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद गई। वहाँ पर वैज्ञानिकों की वार्तानुसार मशरूम उत्पादन करने की जानकारी मिली इसके उपरान्त इन्होंने वहॉ पर मशरूम उत्पादन विषय प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरान्त ऑयस्टर मशरूम का उत्पादन शुरू किया। लेकिन ऑस्टर मशरूम का बाजार भाव कम मिलने के कारण ऑयस्टर मशरूम को सुखाकर बेचा उससे कुछ लाभ हुआ। इसके उपरान्त कृषि विज्ञान केन्द्र पर पुनः बटन मशरूम का प्रशिक्षण प्राप्त किया फिर बडे स्तर पर बटन मशरूम एवं ऑस्टन मशरूम का उत्पादन शुरू किया है। वर्ष 2025–26 में वार्षिक शुद्ध आय 62500 प्राप्त हुई। इससे प्रभावित होकर इन्होंने केसर बॉके बिहारी किसान उत्पादक संगठन की स्थापना 25 नवम्बर, 2025 में की जिसमें लगभग 200 कृषक सदस्य के रूप में जुड़े हैं।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

कु. मछला वर्मा ने अपनी आय एवं जीवन स्थिर में सुधार/बढोतरी करने के उपरान्त आस–पास के लगभग 17 कृषक एवं महिला कुषक को मशरूम उत्पादन तकनीकी ज्ञान देकर व्यवसाय हेतु प्रेरित किया। जिससे आस–पास के किसान लाभान्वित हुये।









कृषक प्रतिक्रिया

कु. मछला वर्मा अपने परिवार के साथ एक सफल मशरूम उत्पादन कर रही है। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है एवं परिवार का पालन पोषण सही चल रहा है।

सब्जी एवं आलू उत्पादक किसानों के लिए "The Soil Brothers" स्टार्टअप की पहल



कृषक का नाम	:	अभय प्रताप सिंह
पिता का नाम	:	श्री जितेंद्र सिंह
ग्राम	:	ऊँची गधेड़ी
विकास खण्ड	:	मोहम्मदाबाद
जनपद	:	फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नम्बर	:	8318098974

कृषक परिचय एवं कृषि कार्य

अभय प्रताप सिंह को 15 वर्ष की आयु से ही कृषि कार्यों में विशेष रुचि एवं सहभागिता रही है। कृषि परिवार से जुड़े होने के कारण उन्होंने बचपन से ही खेतों में फसल उत्पादन, सब्जी खेती, सिंचाई, निराई–गुड़ाई, पौध संरक्षण तथा कृषि कार्यों की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की। परन्तु उनको उच्च आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं हो रहा था। वर्तमान में वे लगभग 1 हेक्टेयर कृषि भूमि पर आलू, तुरई, शिमला मिर्च, करेला, खीरा तथा विभिन्न प्रकार की बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने सब्जी नर्सरी उत्पादन को भी अपनी कृषि गतिविधियों का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है।

कृषि के प्रति निरंतर सीखने और नई तकनीकों को अपनाने की इच्छा के कारण उन्होंने पारंपरिक खेती के साथ आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने का प्रयास किया।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन

कृषि कार्यों को वैज्ञानिक एवं लाभकारी बनाने के उद्देश्य से अभय प्रताप सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), जाजापुर–बंजारा, जनपद फर्रुखाबाद से कृषि संबंधी तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन के माध्यम से उन्होंने सब्जी उत्पादन, उन्नत पौध तैयार करना, नर्सरी प्रबंधन, फसल उत्पादन तकनीक, पौध संरक्षण, पोषण प्रबंधन तथा आधुनिक कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इन गतिविधियों से उन्हें यह समझ विकसित हुई कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण पौध, सही तकनीक, समय पर कृषि जानकारी तथा बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

"The Soil Brothers स्टार्टअप की शुरुआत

कृषि क्षेत्र में अपने अनुभव, रुचि एवं किसानों की समस्याओं को समझते हुए अभय प्रताप सिंह ने किसानों की सहायता के उद्देश्य से "The Soil Brothers" नामक कृषि आधारित स्टार्टअप की शुरुआत की है। इस स्टार्टअप का मुख्य उद्देश्य किसानों को गुणवत्तापूर्ण सब्जी पौध, आधुनिक कृषि तकनीक, नर्सरी संबंधी जानकारी, फसल उत्पादन मार्गदर्शन तथा कृषि प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। The Soil Brothers के माध्यम से किसानों को खेती से संबंधित छोटी–बड़ी उपयोगी जानकारियाँ उपलब्ध कराने, बेहतर पौध सामग्री तक पहुँच बनाने तथा कृषि को अधिक लाभकारी एवं व्यवस्थित व्यवसाय के रूप में विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

तकनीकी हस्तांतरण एवं कृषि उद्यमिता

अभय प्रताप सिंह द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र से प्राप्त तकनीकी जानकारी को अपने खेतों पर प्रयोग किया जा रहा है। विशेष रूप से सब्जी नर्सरी, बेमौसमी सब्जी उत्पादन तथा गुणवत्तापूर्ण पौध तैयार करने पर ध्यान दिया जा रहा है।

The Soil Brothers के माध्यम से निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है:

सब्जी नर्सरी एवं गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन, आलू एवं सब्जी उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक, तुरई, शिमला मिर्च, करेला एवं खीरा की खेती, बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन का प्रयास, किसानों को फसल चयन एवं उत्पादन संबंधी जानकारी, नर्सरी प्रबंधन एवं पौध संरक्षण, कृषि प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन तथा कृषकों को आधुनिक कृषि से जोड़ना आदि सम्मिलित है।

अन्य किसानों तक जानकारी का विस्तार

The Soil Brothers का उद्देश्य केवल स्वयं कृषि करना नहीं, बल्कि अन्य किसानों को भी आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ना है। इसके अंतर्गत किसानों को गुणवत्तापूर्ण पौध उपलब्ध कराने, कृषि संबंधी जानकारी साझा करने तथा खेती में नई संभावनाओं के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

सोशल मीडिया, व्यक्तिगत संपर्क, कृषि प्रशिक्षण एवं खेत पर व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से किसानों तक उपयोगी कृषि जानकारी पहुँचाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

पारम्परिक खेती से हटकर ड्रैगन फ्रूट (कमलम) को बनाया समृद्धि का नया रास्ता



कृषक का नाम	:	पकंज कुमार गंगवार
पिता का नाम	:	श्री अहिवरन सिंह गंगवार
ग्राम	:	हाजीपुर
वि.ख.	:	शमसाबाद
जनपद	:	फर्रूखाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9473779236

फर्रूखाबाद जनपद के वि.ख. शमसाबाद ग्राम हाजीपुर निवासी पंकज गंगवार हमेशा से परम्परागत खेती धान गेहूँ आलू, मक्का एवं की खेती कर रहे थे जिससे उनको अच्छी आय नहीं प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र की तकनीकी हस्तांतरण में भूमिका

श्री पंकज कुमार गंगवार वर्ष 2022–2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये एवं अधिक आय वाली फसलों के बारे में जानकारी ली। फिर ड्रैगन फ्रूट (कमलम) के बारे जानकारी के लिए मैं कृषि विश्वविद्यालय कानपुर जाकर के विभागाध्यक्ष, उद्यान विभाग डा. वी.के. त्रिपाठी से मिला। उन्होंने मुझे ड्रैगन फल के उत्पदान पर विस्तार से जानकारी दी और कहा कि जिला उद्यान अधिकारी से मिलकर इसके लिए सरकारी अनुदान प्राप्त कर सकते हैं। तब पंकज कुमार ने पारम्परिक खेती छोड़कर ड्रैगन फ्रूट (कमलम) जैसे पूरी तरह नए और विदेशी फल का उगाने का जोखिम लिया तब उनके पास न तो कोई व्यवहारिक अनुभव था और पर सटीक जानकारी थी। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने उन्हें तकनीकी रूप से और सशक्त बनाया, वैज्ञानिकों ने पंकज को 0.2 एकड़ भूमि की मिट्टी और शमसाबाद की जनवायु का परीक्षण किया। वैज्ञानिकों ने उन्नत और रोग रोधी प्रजातियों जैसे सी. परपल या वियतनामी–रेड का सुझाव दिया जो कम जगह में भी अधिक पैदावार देने के लिये अनुकूल थी।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

श्री पंकज कुमार वर्ष 2022–2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने ड्रैगन फ्रूट (कमलम) की खेती करने का फैसला लिया। इस समय पंकज एक एकड़ में 2200 पौधे लगाते हैं। एक एकड़ में लगभग 5 कुन्तल फल प्राप्त हो जाते है जिसका बाजार मूल्य लगभग 6.5 लाख के आस पास होती है। इस तरह एक एकड़ में लगभग 4–4.5 लाख शुद्व मुनाफा हो जाता है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री पंकज गंगवार की इस शानदार सफलता और कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक मार्गदर्शन का असर केवल उनके खेत तक सीमित नही रहा। शमसावाद और आसपास के क्षेत्रों में इसे देखकर एक बड़ा कृषि परिवर्तन शुरू हो चुका है पंकज को रोल मॉडल मानकर अन्य किसानों ने भी इस तकनीकी को अपनाया है।



कृषक प्रतिक्रिया

श्री पंकज गंगावार कृषि विज्ञान केन्द्र, के वैज्ञानिकों से समय समय पर तकनीकी मार्गदर्शन लेते रहते हैं एवं उनका कहना हे कि वैज्ञानिक हमारे खेत एवं गांव में आकर प्रशिक्षण गोष्ठी एवं तकनीकी ज्ञान का प्रचार प्रसार करते रहते थे। जिससे आज उनकी आय में वृद्वि के साथ साथ आत्म निर्भर होने का गौरव प्राप्त हुआ।



गन्ने की खेती और देशी गुड़ से समृद्धि का नया रास्ता



कृषक नाम	:	हिमांशू गंगवार
पिता का नाम	:	श्री रामबाबू गंगवार
ग्राम	:	कुईयाधीर
विकास खण्ड	:	शमसाबाद
जनपद	:	फर्रूखाबाद
मोबाइल नम्बर	:	7007653172

फर्रूखाबाद के शमसाबाद ब्लाक के कुँईयाधीर गांव के रहने वाले हिमांशू गंगावार आज क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणा का श्रोत बन चुके है। कुछ साल पहले तक हिमांशू भी अन्य आम किसानों की तरह गेहूँ, सरसों और आलू जैसी पारम्परिक फसलों की खेती करते थे। मेंहनत पूरी होती थी, लेकिन लागत बढ़ने और बाजार में सही दाम न मिलने के कारण मुनाफा बेहद सीमित रहता था।

कृषि विज्ञान केन्द्र की तकनीकी हस्तांतरण में भूमिका

वर्ष 2020–2021 से के.वी.के. के मार्ग दर्शन में हिमांशू ने पिछले सालों से गन्ने की आधुनिक खेती शुरू की। उन्होने सिर्फ गन्ना, मिलों को बेचने के बजाय खुद के देशी और शुद्व गुण बनाने का फैसला लिया। इकाई क्रेशर लगाई और बिना किसी हानिकारक रसायन के पारम्परिक और शुद्व तरीके से देशी गुड़ तैयार करना शुरू किया।

शुद्व और केमिकल मुक्त होने के कारण, उनके गुड़ की मांग बाजार में तेजी से बड़ने लगी, इस तरह उनकी आमदनी कई गुना बढ़ गयी। आज गन्ना से गुड़ बनाकर आत्म निर्भर बन चुके है और दूसरों को भी रोजगार दे रहे है।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय वृद्वि का विवरण

पारम्परिक खेती आलू–गेहूँ और सरसों की खेती में रासायनिक खादों (यूरिया, डी.ए.पी.) और महगें रसायनों के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण प्रति एकड़ लागत लगभग रू. 40000 से 50000 रू. आती थी।

के.वी.के. वैज्ञानिकों के मार्ग दर्शन में प्राकृतिक खेती की तकनीकी सिखाई, आज वे गौमूत्र, गोबर और जीवामृत जैसे घरेलू जैविक इनफुट्स का उपयोग करते है। जिससे खेती की लागत 50 प्रतिशत घटकर रू0 20000 से 25000 प्रति एकड़ आ गयी है। 5–6 सालों पहले जब वह गेहूँ, सरसों एवं आलू की फसलें करते थे, तब उनको शुद्व मुनाफा करीब 40000–50000 रू मुश्किल से मिल पाता था।

वर्तमान में एक एकड़ गन्ने में लागत 40000 से 50000 आती है और इससे लगभग 20 से 22 कुन्तल देशी गुड तैयार हो जाता है जो बाजार में 120 से 150 रू. प्रति किलों के भाव से विकती है इस तरह उनको शुद्व मुनाफा प्रति एकड़ लगभग 3 से 3.5 लाख प्रति एकड़ मिल जाता है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

हिमांशू गंगवार की इस 'गुड़ जैसी मीठी' सफलता को देखकर फर्रूखाबाद और आस पास के क्षेत्रों के अन्य कृषकों के बीच इस तकनीकी को अपनाने और क्षेत्र विस्तार के लिए प्रेरित है। कृषि विज्ञान केन्द्र (के.वी.के.) के माध्यम से इस तकनीकी के प्रचार प्रसार और अन्य किसानों द्वारा किये गये बदलाव का किसानों के मध्य असर पड़ रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री हिमांशू गंगावार ने बताया कि कृषि विज्ञान केन्द्र, जाजपुर बंजारा, फर्रूखाबाद से नवीनतम नवाचार की तकनीकी की सारी जानकारियॉ प्राप्त की एवं समय समय पर के.वी.ए. के कृषि वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया, एवं गोष्ठी प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया और इस तरह अपनी आय में कई गुना वृद्वि की।

महिला स्वयं सहायता समूह/एफ.पी.ओ. के माध्यम से आय में वृद्धि



नाम	:	श्रीमती नारायणी देवी
पति का नाम	:	श्री तिलक सिंह
ग्राम	:	बरतल
विकास खण्ड	:	नवाबगंज
जनपद	:	फर्रुखाबाद
मोबाइल नम्बर	:	8090026689

नारायणी देवी पत्नी श्री तिलक सिंह, ग्राम–बरतल, विकासखण्ड–नवाबगंज, जनपद फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) का निवासी हैं। इनकी शैक्षिक योग्यता नौवी तक है। इनकी अभिरुचि महिला स्वंय सहायता समूह/एफ.पी.ओ. गठन, आत्मा योजना, उन्नत कृषि तकनीक, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक खेती एवं फसल आलू, धान, गेंहू की खेती एवं पशुपालन से कार्य तथा कृषि गतिविधियों में है। वर्तमान में इनके पास कुल 0.6 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि उपलब्ध है। फसल उत्पादन के साथ–साथ पशुपालन गतिविधियों को भी कृषि उद्यम का अभिन्न अंग मानते हुए संचालित करती हैं।

कृषि विभाग की योजनाओं की जानकारी

कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमो इनके द्वारा समय पर प्रतिभाग किया जाता है। जिसमें योजनाओं के बारे मे विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त की तथा पारम्परिक खेती के साथ विविधीकरण अपनाने की सलाह दी गई। कृषि वैज्ञानिको द्वारा मुझे मक्का, धान–गेहूँ एवं आलू आदि फसलों के साथ–साथ कृषि विविधीकरण जानकारी दी गयी है।

जनपद के कृषि अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा समय–समय पर अपनायी जाने वाली नई तकनीक, अधिक उपज वाली नयी–नयी बीज की प्रजातियों की जानकारी प्राप्त करायी गयी तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जनपद स्तर पर प्रशिक्षण/भ्रमण भी कराया गया है। प्रदान किए गए तकनीकी मार्गदर्शन, वैज्ञानिक परामर्श एवं क्षेत्रीय अनुभवों के आधार पर उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने हेतु प्रेरित किया गया जिससे इन्हें दृढ संकल्प के साथ खेती करने की प्रेरणा मिली। उनके परामर्श अनुसार आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों के उपयोग से उत्पादन लागत में कमी लाते हुए फसल उत्पादकता में वृद्धि की संभावनाओं से अवगत कराया गया। साथ ही, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण एवं दीर्घकालीन कृषि स्थिरता को ध्यान में रखते हुए जैविक उर्वरकों, हरी खाद तथा समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन (Integrated Nutrient Management) के वैज्ञानिक उपयोग की

अनुशंसा की गई, जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति में सुधार एवं सतत कृषि विकास को बढ़ावा मिल सके।

अपनायी गयी तकनीकी

मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाते हुए आवश्यक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों के साथ–साथ जैविक उर्वरकों का समुचित उपयोग किया गया। फसल अवधि के दौरान समन्वित फसल प्रबंधन के अंतर्गत सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन तथा आवश्यकतानुसार पौध संरक्षण उपायों को फसल की विभिन्न अवस्थाओं के अनुरूप समयबद्ध एवं वैज्ञानिक ढंग से क्रियान्वित किया गया। इन उन्नत वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों एवं समेकित प्रबंधन तकनीकों के प्रभावी अनुपालन से फसल की वृद्धि एवं विकास में उल्लेखनीय सुधार दक्षता तथा शुद्ध आर्थिक प्रतिफल में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई।

उपलब्धियाँ / परिणाम

मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन, रोपाई एवं रोग प्रबंधन जैसी वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग से फसल की वृद्धि, गुणवक्ता एवं आर्थिक लाभ प्रदता में स्पष्ट सुधार हुआ।



खेती के साथ पशुपालन से आय वृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री यतेन्द्र सिंह
पिता का नाम	:	श्री पाल सिंह
ग्राम	:	ऊँची गधेड़ी, सिरौली
विकास खण्ड	:	मोहम्मदाबाद
जनपद	:	फर्रूखाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9648986866

श्री यतेन्द्र सिंह वर्ष 2020–21 से पूर्व परम्परागत तरीके से धान गेहूँ की खेती करते थे। सिंचाई का साधन इनका स्वयं का है। फसल चक्र का उचित उपयोग नहीं कर पाते थे। जिससे इनकी वार्षिक आय कम थी। इनके पास लगभग 2 हे. कृषि भूमि है। जिसमें आलू, मक्का की खेती करते है। वर्ष 2020 में इनकी कुल शुद्ध आय रू. 125980/– थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकि हस्तान्तरण

श्री यतेन्द्र सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये तथा अपने गांव में के.वी.के. के वैज्ञानिकों को आने का निमन्त्रण दिया। जिससे कि हमारे गांव में विभिन्न विषय में तकनीकि प्रशिक्षण प्रदर्शन इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी मिली। वर्तमान में इनके पास 4–5 भैंसे हैं। पशुओं से प्राप्त स्थानीय स्तर पर दूध बेचकर उन्हे लगभग 1200/– की आय प्राप्त होती है।

तकनीकि हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वर्ष 2019–20 में परम्परागत तरीके से फसल चक्र में आलू और मक्का को उगाते थे, इन फसलो की खेती से रू. 125980/– आय प्राप्त होती थी। खेती के साथ–साथ पशुपालन होने के कारण वर्ष 2021–22 में मक्का का क्षेत्रफल बढ़ाया जिससे कुल आय 145000/– मिला। कुल 2 हे. कृषि भूमि में पशुपालन के साथ आलू और मक्का की खेती करते वर्तमान में आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर वार्षिक आय 355000/– शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं। श्री यतेन्द्र सिंह ने के.वी.के. के सम्पर्क में रहते हुये अपनी खेती और पशुपालन को अधिक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित तरीके से करने में रूचि दिखाई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री यतेन्द्र सिंह के.वी.के. के सम्पर्क में आने के बाद नवाचार के माध्यम से आसपास के गांव के कृषको को भी तकनीकि जानकारी दे रहे हैं। उनका उद्देश्य अपनी पारम्परिक कृषि व्यवस्था





को आधुनिक तकनीकि जानकारी के साथ जोड़कर खेती एवं पशुपालन को अधिक व्यवस्थित बनाना है। इस प्रकार आर्थिक गतिविधियों को वर्ष भर बनाये रखने में सहायता मिलती है। क्षेत्र के किसान खेती के साथ पशुपालन को अतिरिक्त आय के साधन के रूप में देख सकते है। इस प्रकार कृषि और पशुपालन का एकीकृत माडल ग्रामीण परिवारों की आय के विभिन्न स्त्रोत विकसित करने में सहायक हो सकता है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री यतेन्द्र सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र फर्रूखाबाद के द्वारा नवीनतम तक जानकारियाँ प्राप्त किया और समय समय पर प्रशिक्षण प्रदर्शन, गोष्ठी, मेला इत्यादि में प्रतिभाग करके ज्ञान में बढ़ोत्तरी की जिससे आय में कई गुना वृद्धि हुयी।





फसल चक्र एवं सब्जी उत्पादन द्वारा आय में वृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री प्रताप सिंह
पिता का नाम	:	श्री रामचन्द्र
ग्राम	:	अजमतपुर
विकास खण्ड	:	बढ़पुर
जनपद	:	फर्रूखाबाद
मोबाइल नम्बर	:	9305004797

श्री प्रताप सिंह परम्परागत तरीके से वर्ष 2020–21 से पूर्व गेहूँ, मक्का, आलू की खेती करते थे। इनके पास सिंचाई का साधन स्वयं का नहीं था फिर भी फसल चक्र एवं प्रबन्धन का उचित उपयोग नहीं किया जिससे इनकी होने वाली आय बहुत कम थी। वर्ष 2020–21 में उनकी कुल शुद्ध आय रू0 86500/– थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री प्रताप सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आये और यहॉ के वैज्ञानिकों द्वारा बतायी गयी नवीनतम तकनीकी का उपयोग करके व नये बीजो का उपयोग करके एवं आई.डी.एम. व आई.पी.एम. विधि का इस्तेमाल करके अपनी खेती को आगे बढ़ाया। साथ ही फूलगोभी एवं घुईया की भी खेती को किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वर्ष 2020–21 में श्री प्रताप सिंह परम्परागत खेती को करते हुये आय रू0 86500/– प्राप्त कर रहे थे। वर्ष 2021–22 में एक एकड़ में फूलगोभी को करके इन्हे लगभग 150000/– का शुद्ध लाभ हुआ साथ ही आधा एकड़ में घुईया की खेती करके 80–90 हजार रूपये का शुद्ध लाभ हुआ। जिससे इन्होने परम्परागत खेती को कम करते हुये सब्जियों की तरफ इनकी रूचि बढ़ती गयी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री प्रताप सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र फर्रूखाबाद के द्वारा नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त की। साथ ही इन्होने अपने आस पास के गांव के किसानों को भी जानकारी दी। जिससे बहुत तेजी से लोग सब्जियों को उगाने में रूचि ले रहे है। वर्तमान में गॉव के लगभग 25–30 कृषक फूलगोभी एवं अरबी की खेती करके अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री प्रताप सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र फर्रूखाबाद द्वारा नई–नई जानकारियों को प्राप्त किया। समय–समय पर वैज्ञानिकों का भी सहयोग इनको मिलता रहा। मेले गोष्ठी के माध्यम से भी जानकारी मिलती रही जिससे किसानों की आय में वृद्धि हुयी।







खेती के साथ-साथ सिलाई व गृह वाटिका आय वृद्धि का साधन



कृषक का नाम	:	श्रीमती श्यामेन्द्री
पिता/पति का नाम	:	श्री राजू
ग्राम	:	बहेलियनपुरवा
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नम्बर	:	8303156057

श्रीमती श्यामेन्द्री 29 साल की एक प्रगतिशील महिला है, जिन्होंने बारहवीं तक पढ़ाई की है और उनके पति 10वीं पास है। इनके परिवार में 5 सदस्य है, जिनमें 2 बेटियॉ और 1 बेटा शामिल है। उनके पति किसान है और वह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा बनाए गये संकटा मैया स्वयं सहायता समूह की सदस्य और समूह सखी के रूप में स्वयं सहायता समूहों में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है। उनके परिवार के पास 1 एकड़ जमीन, 1 ट्यूबवेल और एक सिलाई मशीन है। उनके पास 5 बकरियॉ और 1 भैस है। खेती से उनके परिवार की कुल आय 2 लाख रूपये है। वह आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग से आती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्रीमती श्यामेन्द्री के पति आलू, धान, गेहूं और मूंगफली की खेती करते थे लेकिन उन्हें लागत के हिसाब से पर्याप्त लाभ नहीं मिल रहा था। इसलिए अपनी आजीविका बढ़ने के और पति की मदद के लिए उन्होंने सिलाई सीखने का निर्णय लिया और 2019 में कृषि विज्ञान केंद्र की महिला वैज्ञानिक से सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर महिलाओं के वस्त्र सिलना शुरू किया, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। सिलाई को बड़े पैमाने पर अपनी आय का जरिया बनाने के लिए उन्होंने 2022 में कृषि विज्ञान केंद्र से कपड़ों के बैग बनाने का प्रशिक्षण लिया और बैग बनाकर पास के बाजार में बेचना शुरू किया। साथ ही उन्होंने अपने घर के पीछे पड़ी हुई जमीन पर पोषक वाटिका भी लगाई, जिससे घर में सब्जियों पर खर्च होने वाले पैसे की बचत हुई व ताजी व रसायन–मुक्त सब्जियाँ भी उपलब्ध हुई।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरणः

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रदान की गई तकनीकी के उपरांत वस्त्रों की सिलाई, कपड़े का बैग बनाने व गृह वाटिका से वर्ष 2024–25 में उन्होंने रु. 1,06,000 शुद्ध आय प्राप्त की जो शुरुआती साल की तुलना में 236 प्रतिशत ज्यादा है।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तारः

श्रीमती श्यामेन्द्री अपने गाँव और आस–पास के गांवों की कई महिलाओं को सिलाई और घर के पीछे गृह वाटिका उगने के लिए प्रेरित करती हैं, ताकि वे अपने परिवार की पोषण व आर्थिक जरूरतों को पूरा कर सके और आस–पास के गाँव की महिलाओं ने भी सलिाई व गृह वाटिका को अपनाकर अपनी व अपने परिवार की आय में वृद्धि की।



कृषक प्रतिक्रियाः

श्रीमती श्यामेन्द्री अपने सिलाई के काम से अपने परिवार की आर्थिक मदद करके बहुत प्रसन्न हैं।



खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन आय का उत्तम श्रोत



कृषक का नाम	:	श्री अलोक कुमार
पिता/पति का नाम	:	श्री शिवनंदन प्रसाद
ग्राम	:	पचोर
विकास खण्ड	:	कन्नौज
जनपद	:	कन्नौज
मोबाइल नम्बर	:	9628961339

श्री अलोक कुमार आत्मज श्री शिवनंदन प्रसाद ग्राम पचोर ब्लॉक कन्नौज के निवासी हैं। इनके पास कुल खेती एक एकड़ है। जिसमें गेहूं, मक्का, धान, आलू, आदि की खेती करते है। इनके पास एक भैस भी है जिससे इनकी शुद्ध आय 79465 प्रति वर्ष थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरणः

श्री अलोक कुमार वर्ष 2020–21 में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के संपर्क में आये तथा विभिन्न विषयों के तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत उन्नत कृषि तकनीकी अपनाने के साथ–साथ कृषि विविधीकरण के आयाम मधुमक्खी पालन का काम शुरू किया। उन्होंने वर्ष में 15 बक्सों से मधुमक्खी पालन का काम प्रारम्भ किया, धीरे–धीरे बक्से बढाकर वर्ष 2024–25 में उक्त किसान 150 मधुमक्खी के बक्सों का संचलन कर रहे हैं।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरणः

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रदान की गयी तकनीकी को अपनाने के उपरांत उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने के साथ–साथ मधुमख्खी पालन के द्वारा वर्ष 2024–25 में रु.225000 शुद्ध आय प्राप्त हुयी।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तारः

कृषि विज्ञान केंद्र से प्रेरणा लेकर जनपद के राजपुर, हाथिन, मेरा आदि गावों के किसानों ने भी खेती के साथ–साथ मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री अलोक कुमार बताते है कि कृषि विज्ञान केन्द्र से सीधे जुड़ने से कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा नवीन कृषि तकनीकी कि जानकारी, खेती व पशुपालन में उनको अपनाने से फसल का उत्पादन बढ़ा व लागत काम हुयी इसके साथ ही मधुमक्खी पालन से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हुई जिससे जीवन स्तर में सुधर हुआ।





खेती के साथ पशुपालन आय वृद्धि का उत्तम साधन



कृषक का नाम	:	श्रीमती स्नेहलता
ग्राम	:	पचपुखरा,
ब्लॉक	:	जलालाबाद,
जिला	:	कन्नौज
मोबाइल नम्बर	:	6394033102

श्रीमती स्नेहलता 54 वर्ष की प्रगतिशील महिला हैं, जिन्होंने 10वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की है। उनके परिवार में बहू, 2 बेटे और एक पोता सहित कुल 7 सदस्य हैं। उनके पति कृषि में स्नातक हैं और पेशे से किसान हैं, तथा वह गृहिणी थीं। वह स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सदस्य हैं और अपनी डेयरी फार्म चलाती हैं। वह गेहूं, धान, मक्का और आलू की खेती करती थीं।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरणः

2020–21 में वह गृह विज्ञान के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान के वी के कन्नौज के संपर्क में आईं। उन्होंने अपने घर में ही डेयरी इकाई शुरू करने की इच्छा व्यक्त की। इससे पहले उनके पास एक भैंस थी और उनका परिवार अपने खेत में मक्का, आलू और गेहूं की खेती करता था, जिससे उन्हें अपने घर–परिवार को ठीक से चलाने के लिए पर्याप्त आय नहीं मिलती थी। के वी के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में उन्होंने अपनी डेयरी फार्म शुरू की और खेत में ग्रीष्मकालीन मूंगफली की बुवाई भी शुरू की।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरणः

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रदान की गई तकनीकी अपनाने के उपरांत उन्होंने मक्का, आलू और गेहूं की खेती के साथ ही ग्रीष्मकालीन मूंगफली और अपनी डेयरी फार्म शुरू की जिससे उन्हें वर्ष 2024–25 में रु 641450.00 की शुद्ध आय प्राप्त हुयी जो 2020–21 से 387 गुना ज्यादा है।

अन्य किसानों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तारः

स्नेहलता ने डेयरी फार्मिंग को एक उद्यम के रूप में अपनाकर तथा ग्रीष्मकालीन मूंगफली की खेती करके अपने गाँव और आसपास के गाँवों की अनेक महिला किसानों और किसानों को प्रेरित किया। उनके खेत का भ्रमण करने के बाद कई किसानों ने डेयरी फार्मिंग और ग्रीष्मकालीन मूंगफली की खेती अपनाई।

कृषक प्रतिक्रियाः

किसान को गेहूँ, धान, आलू और दूध आदि से प्रतिवर्ष 231539 रुपये की आय होती थी। उन्हें अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति और बच्चों की फीस का भुगतान करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता था। जब वे के0 वी0 के0 के संपर्क में आईं, तो उन्हें डेयरी फार्मिंग और ग्रीष्मकालीन मूंगफली के लिए तकनीकी सहायता मिली। अब उन्हें 641450 रुपये की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।







कृषि एवं पशुपालन द्वारा जीवन यापन



कृषक का नाम	:	श्री नरेन्द्र सिंह
पिता का नाम	:	श्री जनार्दन सिंह
ग्राम	:	ढोंगवा
विकास खण्ड	:	बांकेगंज
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नम्बर	:	9415148077

श्री नरेन्द्र सिंह ग्राम ढोंगवा विकास खण्ड बांकेगंज जिले लखीमपुर खीरी के प्रगतिशील एवं नवोन्मुखी किसान हैं जिनके पास 3.0 एकड जमीन है जिसमें 2020–21 में धान, गन्ना, गेहूं और सरसों की पुरानी प्रजातियां बोया करते थे। उसी समय कृषि विज्ञान केन्द्र, जमुनाबाद, लखीमपुर खीरी के वैज्ञानिकों से सम्पर्क हुआ। उस समय इन सभी से उनकी आय कुल रू 2,50,000 प्रति वर्ष होती थी।

कृषि विज्ञान द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2020 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये तो उन्हे बीज उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण दिया गया जिससे वर्ष 2025–26 में 2.5 एकड़ क्षेत्रफल में गन्ना और 0.5 एकड़ में धान की फसल 2.0 एकड़ में गेंहूं के साथ–साथ दलहन की फसल भी कर रहें हैं। इनके पास अच्छी नस्लों की दो गायें हैं। जिनसे भी अच्छी आय प्राप्त होती है। इस प्रकार से आज उनकी शुद्व आय 3,50,000 रू0 प्रति वर्ष है।

तकनीकी हस्तान्तरण के फलस्वरूप आय वृद्धि

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दी गयी तकनीकी जानकारी से फसलों की उन्नत तकनीकों को अपनाने एवं पशुपालन द्वारा दुग्ध उत्पादन व्यवसाय करने से भी श्री सिंह को वर्ष–2025–26 में कुल रू0 3,50,000 की आय प्राप्त हुई जो कि वर्ष–2020–21 की कुल आय 2,50,000 की तुलना में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी क्षेत्र विस्तार

श्री नरेन्द्र सिंह की सफलता को देखते हुए अन्य किसान अच्छी एवं उन्नत खेती के साथ–साथ पशुपालन कर अपनी आय बढ़ा रहें हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री नरेन्द्र सिंह केन्द्र द्वारा प्राप्त तकनीकी ज्ञान द्वारा अपने परिवार की आय प्राप्त कर एक खुशहाल एवं सम्मानित महसूस कर रहें हैं।



कृषि एवं पशुपालन द्वारा आय में बढ़ोत्तरी



कृषक का नाम	:	श्री दिनेश कुमार
पिता का नाम	:	श्री राम भरोसे
ग्राम	:	बहादुरगंज
विकास खण्ड	:	कुम्भी–गोला
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नम्बर	:	9935277475

श्री दिनेश कुमार पुत्र श्री राम भरोसे ग्राम बहादुरगंज के प्रगतिशील किसान हैं। जो अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ गांव में ही निवास करते हैं। इनके पास लगभग 3.0 एकड़ उपजाऊ जमीन है तथा दो हरियाणा नस्ल की दो गायें तथा देशी नस्ल की एक भैंस हैं। वे वर्ष–2021–22 में गन्ना धान गेंहू एवं सब्जी करते थे तथा पुरानी कम उपज देने वाली प्रजातियाँ बोते थे जिससे उनकी प्रतिवर्ष आमदनी–1,85,000 रू0 होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण



वर्ष–2021 में कृषि विज्ञान केन्द्र जमुनाबाद के सम्पर्क में आकर अपनी आमदनी बढ़ाने के विषय में जानना चाहा तो वैज्ञानिकों ने उन्हे पशुपालन की तकनीकी जानकारी प्रशिक्षण द्वारा दी। जानकारी प्राप्त कर आज वे अधिकांश कृषि कार्य बैलों द्वारा ही करते हैं तथा गायों तथा भैंस का दूध अच्छी दरों पर बेंच रहें हैं। इस प्रकार इनकी आमदनी रू0 2,80,000 प्रतिवर्ष हो गई है जो कि वर्ष–2020–21 की तुलना में तकरीबन 51 प्रतिशत अधिक है।

अन्य किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीक से क्षेत्र विस्तार इनकी प्रेरणा से अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी एवं क्षेत्र विस्तार श्री दिनेश कुमार जी की पारिवारिक एवं आर्थिक सफलता को देखते हुए आस–पास के किसान भी कृषि बागवानी के साथ–साथ पशुपालन को बढाकर अपनी आमदनी में इजाफा कर रहें हैं।



कृषक प्रतिक्रिया

श्री दिनेश कुमार अपनी मेहनत तथा तकनीकी द्वारा व्यवसायिक कृषि एवं पशुपालन से संतुष्ट हैं। और परिवार सहित सम्मानित जीवन का आनन्द ले रहें हैं।

एकीकृत फसल पद्धति द्वारा आय में बढोत्तरी

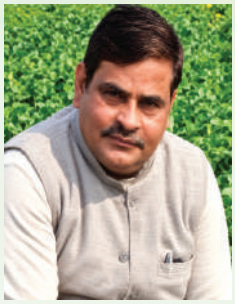

कृषक का नाम	:	श्री अतुल रस्तोगी
पिता का नाम	:	स्व. कामेश्वरदयाल रस्तोगी
ग्राम	:	ईटरोरा (राजेपुर)
विकास खण्ड	:	मोहम्मदी
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नम्बर	:	9415180592

एकल कृषि पद्धति अपनाकर आय में बढोत्तरी न होने से परेशान होकर ईटरोरा गांव के श्री अतुल रस्तोगी आय बढाने के प्रति जागरूकता के क्रम में सोचते रहे तथा विभिन्न कृषि क्रियाओं द्व ारा अपने 6 एकड खेत में गन्ना, धान, गेंहू एवं सरसों से तकरीबन रू0 1,97,500.00 प्रतिवर्ष आमदनी वर्ष 2021–22 में प्राप्त कर रहे थे।

कृषि विज्ञान द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2021–22 में कृषि विज्ञान केन्द्र, जमुनाबाद के वैज्ञानिकों से सम्पर्क होने पर उनमें उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। रस्तोगी जी ने केन्द्र द्वारा होने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों एवं अन्य कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर गौ आधारित प्राकृतिक एवं जैविक खेती के गुर सीखकर आज कम लागत में प्रसंशनीय कृषि एवं पशुपालन का कार्य सुलतापूर्वक कर रहें हैं।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय वृद्धि का विवरण

गत वर्ष 2025–26 में श्री अतुल रस्तोगी द्वारा गौ आधारित कृषि करने पर एक तरफ जहां आमदनी बढकर रू0 2,96,250.00 हो गयी वहीं जो भी उत्पादन प्राप्त हो रहा है उसमें शुद्धता और गुणवत्ता होने के कारण बाजार मूल्य भी अधिक प्राप्त हो रहा है।



कृषक प्रतिक्रिया

श्री अतुल रस्तोगी आज कृषि और औध ानिक फसलों तथा पशुपालन द्वारा एकीकृत फसल पद्धति को अपनाने वाले सफल किसान हैं। जो कि इस काम से संतुष्ट होकर जनपद के विभिन्न गांवों में इस मॉडल का प्रचार–प्रसार कर रहें हैं।

कृषक महिला कालिन्द्री राठौर ने खेतों से बनाई अलग पहचान



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती कालिन्द्री राठौर
पति का नाम	:	श्री शेर सिंह राठौर
ग्राम	:	बाईकुआँ
विकास खण्ड	:	पसगंवा
जनपद	:	लखीमपुर खीरी
मोबाइल नम्बर	:	94533465597

हाईस्कूल तक पढाई, तीन बेटों की माँ और पति के साथ फार्म हाउस पर रहकर खेती और पशुपालन की जिम्मेदारी सम्भलने वाली ग्राम बाईकुआं की श्रीमती कालिन्दी राठौर की वार्षिक आय रू0 90,150.00 हुआ करती थी जिसमें बेटों की पढाई तथा पारिवारिक खर्च मुश्किल से चल पाता था।

कृषि विज्ञान केन्द्र से तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2021–22 में कृषि विज्ञान केन्द्र जमुनाबाद के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आकर उन्होने तकनीकी ढंग से कृषि कार्य कराया और विभिन्न तकनीकी प्रदर्शनों द्वारा जानकारी प्राप्त कर अच्छा उत्पादन करना शुरू किया और उन्नत नस्लों की दो गायें एक भैंस द्वारा अच्छा उत्पादन प्राप्त कर रहीं हैं।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय वृद्धि का विवरण

वर्ष 2025–26 में श्रीमती राठौर जैविक खेती, फसल चक्र, मिट्टी एवं कीट रोग प्रबन्धन द्वारा धान एवं गेंहू के साथ आलू, हल्दी और सब्जियों की खेती कर रहीं है। जिससे उन्हे रू0 1,85,250.00 रूपये की आय प्राप्त हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तार

बाईकुआं गांव के आस–पास के कई किसान श्रीमती राठौर द्वारा खेतों में उपजाये गये तमाम नवाचारों द्वारा प्रेरित होकर कृषि एवं पशुपालन द्वारा अपनी आय में वृद्धि कर रहें हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषक महिला श्रीमती कालिन्दी राठौर बतातीं हैं कि कृषि द्वारा जहां मुझे अधिक आमदनी प्राप्त हो रही है वहीं जनपद स्तरीय प्राप्त सम्मान से अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रही हैं।





खेती में नवाचार से आय वृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री रईस अहमद
पति का नाम	:	श्री सईद अहमद
ग्राम	:	बेलवा
विकास खण्ड	:	मोहम्मदी
जनपद	:	लखीमपुर खीरी

श्री रईस अहमद परम्परागत तरीके से धान, गेंहू, गन्न की खेती करते थे। इनके पास सिंचाई का साधन उपलब्ध है लेकिन उन्नत तकनीकों का प्रयोग नही करते थे जिससे इनकी वार्षिक आय बहुत कम थी। परम्परागत खेती से वर्ष 2020 के पूर्व कुल आय रू0 8,70,00 थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री रईस अहमद केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद अपनी खेती में उन्नत तकनीकों का उपयोग शुरू किया एवं लगातार केन्द्र से मार्गदर्शन लेते रहे एवं अपने खेतों में केन्द्र के प्रदर्शनों एवं परीक्षण ों को सफलतापूर्वक लगाया साथ ही साथ गन्ने में उन्नतशील प्रजातियों केले में उन्नत प्रजातियों का प्रयोग उत्पादन के लिए किया तथा केले की टिश्यू ल्चर पौध की हार्डेनिंग का भी कार्य किया। और समय–समय पर तकनीकी जानकारी केन्द्र से लेते रहे।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण



वर्ष 2020–21 में अपने पारम्परिक खेती के साथ केले की खेती का समावेश उन्नतशील प्रजातियों के साथ किया। तथा निरन्तर उन्नत तकनीकों का प्रयोग गन्ना उत्पादन में किया। प्रजातियों के चयन एवं बेहतर खाद प्रबन्धन से अच्छी पैदावार प्राप्त हुई। केला उत्पादन में भी उन्नतशील टिश्यू कल्चर और पौध की बिक्री भी किया और खेत में प्रयोग से केले में अच्छी



उपज प्राप्त के साथ अच्छा फायदा भी हुआ। लगातार सन्तुलित खाद एवं कीट प्रबन्धन से अच्छा मुनाफा भी प्राप्त किया। जिससे 2024–25 में कुल आय रू0 13,80,000 प्राप्त हुई।

अन्य कृषकों द्वारा क्षेत्र विस्तार

श्री रईस अहमद द्वारा अपनायी गई नवीनतम तकनीकों से ग्राम सभा के आस–पास के कई कृषकों द्वारा बहुत तेजी से अपनाया जा रहा है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री रईस अहमद ने कृषि विज्ञान केन्द्र लखीमपुर के द्वारा नवीनतम नवाचार की सारी तकनीकी जानकारियां प्राप्त की एवं समय–समय पर केन्द्र के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी प्रतिभाग किया। जिससे ज्ञान प्राप्त के साथ–साथ आय में भी अच्छी वृद्धि हुई।

वर्मी कम्पोस्टिंग-आय का साधन



कृषक का नाम	:	रामनरेश
पिता का नाम	:	श्री छेदी लाल
ग्राम	:	पिपरा करमचन्द
विकास खण्ड	:	लखीमपुर
जनपद	:	लखीमपुर–खीरी
मोबाइल नम्बर	:	8601831605

श्री रामनरेश आत्मजा छेदी लाल ग्राम पिपरा करमचन्द के निवासी है। इनके पास कुल खेती का रकबा 3.50 एकड़ है जिसमें से धान गेंहू गन्ना इत्यादि की खेती कर रहे हैं। इसके साथ–साथ रामनरेश जी पशुपालन तथा मछली पालन से भी अच्छी आमदनी कर रहे हैं। वर्ष 2021–22 में खेती पशुपालन तथा मछली पालन से कुल शुद्ध आय रू0 1,75,000/– प्राप्त करते थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री रामनरेश जी कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में सन् 2021 में आये। इन्होंने अपने गाँव में एक गोष्ठी का आयोजन करवाया तथा वैज्ञानिकों के सम्पर्क से इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट को व्यवसाय के रूप में अपनाने की इच्छा व्यक्त की। वैज्ञानिकों के तकनीकी तथा नावार्ड के वित्तीय सहयोग से इन्होंने 20 वर्मी पिट का निर्माण कराकर उत्पादन शुरू किया जिससे इनकी आय में आशातीत वृद्धि हुई।





तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय में वृद्धि

कृषि विज्ञान केन्द्र जमुनाबाद, लखीमपुर–खीरी द्वारा दिये गये प्रशिक्षकों एवं उन्नत तकनीकी से इनको वर्ष 2025 में कुल शुद्ध आय रू0 4,00,000/–प्राप्त हुई जो कि इनके स्वयं के प्रयास से संभव हो पायी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री रामनरेश द्वारा वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन के उपयोग ग्रामवासियों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत है तथा दूसरे गांव के लोग भी इसे अपना रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा उपलब्ध करायी गयी तकनीक से मिट्टी की दशा में सुधार हो रहा है उपज बढ़ रही है तथा आय में सकारात्मक वृद्धि हो रही है।

खेती के साथ बकरी पालन आय वृद्धि का साधन

कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती आशा देवी
पति का नाम	:	श्री राजेश
ग्राम	:	भड़ायल
विकास खण्ड	:	टड़ियावा
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	8004966495



श्रीमती आशा देवी, ग्राम–भड़ायड़, विकास खण्ड–टड़ियावा, जनपद–हरदोई की प्रगतिशील कृषक महिला हैं। इनके परिवार में खेती तथा पशु पालन किया जाता है। इनके पास 1 एकड़ जमीन खेती योग्य है जिसमें इनका परिवार धान, गेहूँ, सरसो आदि की खेती करते हुये बकरी पालन का भी कार्य करता था जिससे उन्हें वार्षिक शुद्ध आय रू0 40,500/– प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्रीमती आशा देवी, कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में वर्ष 2024 में आयी तथा विभिन्न विषयों पर तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वैज्ञानिको ने नई प्रजातियों एवं तकनीकों को उनके प्रक्षेत्र पर प्रर्दशन एवं मूल्यांकन कराया जिसके परिणामों को देखकर इन्होंने नई तकनीकों एवं प्रजातियों को अंगीकृत किया। श्रीमती आशा देवी ने उत्तर प्रदेश की स्थानीय बरबरी नस्ल की तथा बड़े आकार की जमुनापारी बकरियों का पालन शुरू कर दिया। दूध को सहकारी समितियों को बेचना तथा बकरी के बच्चों को भी नौ माह की उम्र में बेचने आदि का कार्य कर अपनी आय को दो गुना बढ़ाया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदान की गयी तकनीकों को अपनाने तथा उच्च नस्ल की बकरी पालन से इनको वर्ष 2025–26 में कुल सालाना शुद्ध आय रू. 2,70,500/– की प्राप्त हुयी। जो कि पूर्व की तुलना में 567 प्रतिशत अधिक थी।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्रीमती आशा की सफलता से ग्राम भड़ायल के अलावा अन्य गाँव की महिलाओं ने भी इस तकनीक को अपनाया तथा उन्नत नस्ल की बकरी का पालन कर आय में वृद्धि कर रही है।



कृषक प्रतिक्रिया

कृषक महिला श्रीमती आशा देवी, कृषि विज्ञान केन्द्र हरदोई से प्राप्त इस नवीनतम तकनीकी को जानकर अत्यन्त प्रसन्न है साथ अपनी आय में भी वृद्धि कर रही हैं।

खेती के साथ पशुपालन : आय का उत्तम स्रोत



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती फूलमती
पिता/पति का नाम	:	श्री रामस्वरूप
ग्राम	:	बुझवा
विकास खण्ड	:	टड़ियावा
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	7068579938

वर्ष 2024–25 से पूर्व श्रीमती फूलमती ग्राम–बुझावा, विकासखण्ड टड़ियावा, जनपद हरदोई निवासी अपनी खेती परम्परागत तरीके से करके उसमें धान तथा गेहूँ की फसल पैदा करती थी। खेती के साथ यह पशुपालन का कार्य भी करती थी जिससे इनको वार्षिक शुद्ध आय रू0 1,25,800/– प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2022–23 के पश्चात् कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात इनको प्रशिक्षणों के माध्यम से नई–नई कृषि तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। साथ ही इन्हें आधुनिक तकनीक के प्रक्षेत्र परीक्षण, उन्नत प्रजातियों के प्रदर्शन तथा अच्छी नस्ल की भैस एवं गाय पालन की वृहद जानकारी भी दी गयी। उपरोक्त प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण द्वारा जागरूक होकर इन्होंने नई–नई तकनीकियों को अपनाना शुरू कर दिया। खेती के साथ पशुपालन कार्य को बढ़ावा देने के लिये 6 भैंस तथा 2 गाय को भी पाला। जिसमें उन्नत नस्ल की भदावर एवं मुर्रा भैंस तथा देशी नस्ल की गाय को पालकर पशुपालन व्यवसाय और बेहतर किया।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वर्तमान में श्रीमती फूलमती धान, गेहूँ साथ में आलू की भी खेती कर रही है तथा 6 भैंस एवं दो गाय भी पाल रही हैं, जो कि पूर्व की अपेक्षा 123.21 प्रतिशत अधिक है। जिससे उनकी शुद्ध वार्षिक आय वर्ष 2025–26 में बढ़कर सालाना रू0 2,80,800/– हो गयी। साथ ही देशी गाय के गोबर से जीवामृत–बीजामृत तथा उच्च गुणवत्तायुक्त गोबर की खाद भी मिलने लगी। जिससे खेती में रासायनिक खाद आदि का प्रयोग नहीं हुआ और खेती की लागत भी कम हो गयी तथा मृदा स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्रीमती फूलमती के द्वारा खेती में नवीनतम तकनीको का प्रयोग करने से साथ ही बेहतरीन पशुपालन करने से उनकी आय में वृद्धि हुयी जिससे अन्य कृषक बन्धु भी जागरूक होकर नई–नई तकनीकों को अपनाने लगे है।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषक महिलायें बताती है कि कृषि विज्ञान केन्द्र हरदोई के कृषि एवं गृह वैज्ञानिक के द्वारा तकनीकी जानकारी प्राप्त कर उसे अपनाने से आमदनी में वृद्धि हुयी एवं जीवन स्तर में भी सुधार हुआ है। अब वह एक खुशहाल जीवन जी रहे हैं।

खेती के साथ मधुमक्खी पालन समृद्धि का आधार



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती मधू सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री रामरतन सिंह
ग्राम	:	रतनपुर
विकास खण्ड	:	भरखनी
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	9695046161

श्रीमती मधू सिंह, पति भी राम रतन सिंह खेती करके अपनी जीविका यापन कर रहे थे। एक दिन श्रीमती मधू सिंह ने सोचा कि हमें खेती के साथ अन्य रोजगार में भी अवसर ढूँढने चाहिये। तब उन्हे के0वी0के0 के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन की जानकारी हुयी। चूँकि श्रीमती सिंह स्नातक पास थी। अतः उन्होंने खेती के साथ अन्य व्यवसाय भी शुरू कर दिये। इनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 2,58,000/– थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण



वर्ष 2022–23 के पश्चात् कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात इन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से नई तकनीकी की जानकारी प्रदान की गयी। इसी के क्रम में कृषि तकनीकियों का प्रक्षेत्र परीक्षण, नई प्रजातियों के प्रदर्शन आदि पर कई कार्यक्रमों का आयोजन इनके प्रक्षेत्र पर किया गया। साथ ही इन्हें कृषि विविधीकरण के बारे में भी बताया। जिसके अन्तर्गत श्रीमती मधू सिंह ने अपने पति की मदद से मधुमक्खी पालन की शुरूआत की। प्रारम्भ में उन्होंने वैज्ञानिक तरीकों को समझा तथा 50 डब्बों से कार्य शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण



वर्तमान में श्रीमती मधू सिंह अपनी 4 एकड़ भूमि में गेहूँ, सरसों, आलू की खेती के साथ मधुमक्खी पालन का कार्य भी कर रही हैं जिसके कारण इनकी वार्षिक आय वर्ष 2025–26 में बढ़कर रू0 5,60,000/– हो गयी। जो कि पूर्व के वर्षों की तुलना में लगभग तीन गुना हो गयी है। श्रीमती मधू एवं उनके पति केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा सुझाए गये विभिन्न कृषि तकनीकों के प्रयोग से आय में वृद्धि के कारण खुशहाल जीवन यापन करने लगे।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

आस–पास के अन्य किसान भी श्रीमती मधू सिंह के द्वारा अपनाई गयी कृषि विवधीकरण को देखकर सीख रहे हैं और कई छोटे किसान ने 10–50 बक्सों के साथ मधुमक्खी पालन की शुरूआत करके मुनाफा कमा रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषक बताते हैं कि कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम कृषि की जानकारी व खेती में उनको अपनाने से फसल उत्पाद अधिक हुआ साथ ही आमदनी भी बढ़ी व जीवन स्तर में सुधार हुआ।

खेती के साथ पशुपालन : आय वृद्धि का साधन



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती राजरानी
पिता/पति का नाम	:	श्री शिवकुमार
ग्राम	:	मुजाहिदपुर
विकास खण्ड	:	बावन
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	9695969235

पशुपालन के क्षेत्र में भारत की कई महिला किसानों ने पारम्परिक बेड़ियों को तोड़कर न केवल अपने परिवार को आर्थिक संबल दिया है, बल्कि वे समाज के लिये भी एक मिसाल बन चुकी है। श्रीमती राजरानी ने भी डेयरी फार्मिंग के जरिये सफलता की एक नयी कहानी लिखी है। यह कृषक महिला भी खेती के साथ पशुपालन कर अपनी जीविका यापन कर रही थी। चूँकि इन्हें तकनीकी व आधुनिक कृषि के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं थी अतः अपनी 1 एकड़ जमीन व पशुपालन से इन्हें वार्षिक शुद्ध आय रू0 2,50,500/– प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2022–23 के पश्चात् जब श्रीमती राजरानी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आयी तो इन्होंने खेती की नयी विधायें, तकनीक आदि की जानकारी के साथ–साथ मवेशियों के



पालन–पोषण, दुग्ध उत्पान, सहकारी समितियों आदि की जानकारी प्रशिक्षण के माध्यम से ली। उनके प्रक्षेत्र पर वैज्ञानिकों द्वारा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, परीक्षण आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। जिससे उन्होंने उन्नत नस्त के 5 भैंस (भदावरी मुर्गी) तथा देशी गाय को पालकर दूध का व्यवसाय शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वर्तमान में श्रीमती राजरानी धान एवं सरसों की खेती के साथ पशुपालन का भी कार्य कर रही हैं जिससे उनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 6,58,000/– हो गयी है। जो कि पूर्व की तुलना में दो गुने से भी ज्यादा है। बढ़ी हुयी आमदनी से अब उनका परिवार खुशहाल जीवन–यापन कर रहा है साथ ही वे अब कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आधुनिक तकनीकी को अपनी खेती में प्रयोग भी कर रही है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्रीमती राजरानी के खेती व पशुपालन व्यवसाय में हुयी तरक्की देखकर अन्य कृषक भी उनके द्वारा अपनाई तकनीक को सीखकर अपने प्रक्षेत्र एवं फसलों पर प्रयोग कर लाभान्वित हो रहे हैं।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के वैज्ञानिकों के द्वारा नवीनतम व आधुनिक कृषि तकनीक व जानकारियों से उनकी फसल पहले से कई गुना ज्यादा लाभ दे रही है और वह कृषि विविधीकरण पद्धति को अपनाकर खुशहाल जीवन–यापन कर रहे हैं।

खेती में सब्जी उत्पादन समृद्धि का आधार



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती राजरानी
पिता/पति का नाम	:	श्री दुर्गेश
ग्राम	:	मुजाहिदपुर
विकास खण्ड	:	बावन
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	9695969235

वर्ष 2023–24 से पूर्व श्रीमती राजरानी परम्परागत तरीके से धान, गेहूँ तथा सब्जी की खेती करती थी। इनके पास 2 एकड़ जमीन तथा अपना सिंचाई का साधन है फिर भी आधुनिक तकनीक का ज्ञान ना होने के कारण इनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 2,80,600/– थी जो कि बहुत कम थी तथा इन्हें अपनी जीविका चलाने में काफी समस्या आ रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण



श्रीमती राजरानी वर्ष 2022–23 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आयी तथा अपने गाँव को अंगीकृत करने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से कहा तत्पश्चात उनके गाँव मुजाहिदपुर में कृषकों को विभिन्न विषय के अन्तर्गत कृषक प्रशिक्षण दिया गया साथ ही उनके प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं परीक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। साथ ही नवीन प्रजाति के बीजों, उन्नत कृषि तकनीक, नयी फसलों के साथ फसल चक्र में परिवर्तन, कीट प्रबंधन आदि की सम्पूर्ण जानकारी दी गयी।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र से तकनीकी जानकारी लेने के बाद श्रीमती राजरानी ने आधुनिक खेती कर सब्जी उत्पादन को आगे बढ़ाया और वर्तमान में उनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 6,25,500/– हो गयी। उन्होंने खेती में विविधीकरण तरीके को अपनाया और उनकी आय अब लगभग दो गुनी से अधिक हो गयी है। जिससे उनका परिवार खुशहाल जीवन यापन कर रहा है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी का क्षेत्र विस्तार

वर्तमान में श्रीमती राजरानी जनपद हरदोई में सब्जी उत्पादन का अच्छा कार्य कर रही है। आज जिले में उनकी एक पहचान बन चुकी है। वैज्ञानिक विधि से खेती कर आय में इजाफा होने के कारण अब उनका परिवार समृद्धि की ओर अग्रसर है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्रीमती राजरानी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के द्वारा नवीनतम एवं आधुनिक तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया है जिससे उनकी आय में कई गुना वृद्धि हुई है।

मुर्गी पालन आय वृद्धि का स्रोत

कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती सुनीता पाल
पति का नाम	:	श्री अनिल कुमार पाल
ग्राम	:	रतनपुर
विकास खण्ड	:	भरखनी
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	9956428201



श्रीमती सुनीता पाल, ग्राम–रतनपुर, जनपद हरदोई की एक जागरूक और प्रगतिशील कृषक महिला है। वह अपने पति के साथ मिल कर खेती एवं पशुपालन का कार्य कर रहीं थीं। उनके पास कृषि योग्य 5 एकड़ भूमि थी तथा उनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 3,50,500/– थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्रीमती सुनीता पाल वर्ष 2022–23 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आयी तथा अपने गाँव को चयनित करने के लिये केन्द्र के वैज्ञानिकों को कहा, उसके उपरान्त उनके गाँव रतनपुर में कृषकों को विभिन्न विषय के अन्तर्गत कृषक प्रशिक्षण किये गये। इसके अतिरिक्त उन्हें मुर्गी पालन का विस्तार से प्रशिक्षण देकर विभिन्न जानकारियाँ जैसे बायोसिक्योरिटी, सही दाना और पानी, सीधा बाजार से सम्पर्क आदि की तकनीकियॉ बताई गई।



तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र से तकनीकी जानकारी लेने के बाद श्रीमती सुनीता पाल ने आधुनिक तरीके से मुर्गी पालन व्यवसाय शुरू कर दिया और वर्तमान में उनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 6,58,000/– हो गयी है। उन्होंने खेती में विविधीकरण कर अपनी आय को दो गुना कर लिया।



अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी का क्षेत्र विस्तार

वर्तमान में श्रीमती सुनीता पाल, जनपद–हरदोई में सब्जी उत्पादन का अच्छा कार्य कर रही है। अन्य कृषक भाई एवं बहने उनसे प्रेरित होकर प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी प्राप्त कर रहे है और तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर उन्हीं की राह पर चलने का प्रयास कर रहे है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्रीमती सुनीता पाल अपने परिवार के साथ एक खुशहाल सम्पन्न जीवन जी रहीं हैं। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त नवीनतम जानकारियों के लिए समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण भी करतीं हैं।

सब्जी उत्पादन द्वारा कृषक आय में वृद्धि



कृषक महिला का नाम	:	श्रीमती माधुरी
पिता/पति का नाम	:	श्री राम बहादुर
ग्राम	:	मुजाहिदपुर
विकास खण्ड	:	बावन
जनपद	:	हरदोई
मोबाइल नम्बर	:	9305970481

श्रीमती माधुरी, ग्राम–मुजाहिदपुर, विकास खण्ड–बावन, जनपद–हरदोई की प्रगतिशील कृषक महिला है। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर है। इनके पास 2 एकड़ जमीन है जिसमें यह पारम्परागत तरीके से खेती करती थी, जिससे उन्हें प्रतिवर्ष रू0 2,25,800/– की शुद्ध आय होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2022–23 के उपरान्त कृषि विज्ञान केन्द के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के पश्चात इनको प्रशिक्षणों के माध्यम से नई कृषि तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। साथ ही नई कृषि तकनीकियों के प्रक्षेत्र परीक्षण, नई उन्नत प्रजातियों के प्रदर्शन, मल्चिंग तकनीक, मिश्रित खेती आदि पर कई कार्यक्रम इनके ग्राम में कराये गये।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

श्रीमती माधुरी धान, एवं सब्जी की खेती कर रही हैं तथा दुधारू जानवरों को भी पाल रही हैं। केन्द्र के वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी होने पर बंडा की वृहद स्तर पर खेती कर रही हैं। तकनीकी ज्ञान होने पर अब उनकी आमदनी दो गुनी हो गयी है तथा उन्होंने बिचौलिये के बजाय हरदाई की स्थानीय मंडी और आस–पास के कस्बो में सीधे व्यापारियों को सब्जियाँ बेचना शुरू कर दिया। जिससे अब उनकी शुद्व वार्षिक आय रू0 4,80,800/– हो गई है।

अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी का क्षेत्र विस्तार

आज श्रीमती माधुरी, हरदोई जिले की पहचान बन चुकी हैं। उनकी सफलता को देखकर गाँव के अन्य कृषकों ने भी सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू कर दिया है तथा वे सभी आधुनिक तकनीक के साथ विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ उगाकर मुनाफा कमा रहे हैं।



कृषक प्रतिक्रिया

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदान आधुनिक तकनीकी को सीखकर कृषक सब्जी उत्पादन में रूचि लेने लगे हैं। साथ ही कृषकों की आय में भी वृद्धि हुयी है।

एकीकृत कृषि प्रणाली/कुशल एवं लाभकारी कृषि का वैज्ञानिक मॉडल



कृषक का नाम	:	हरी सिंह
पिता/पति का नाम	:	गंगा सिंह
ग्राम	:	ताजपुर
विकास खण्ड	:	गंजडुंडवारा
जनपद	:	कासगंज

श्री हरी सिंह ग्राम ताजपुर, विकास खण्ड गंजडुंडवारा, जनपद कासगंज के एक प्रगतिशील कृषक हैं। उनका परिवार कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। पूर्व में वे धान, गेहूँ, अरबी एवं हरी मिर्च की खेती के साथ एक गाय का पालन करते थे, जिससे उन्हें लगभग ₹ 95500 प्रति वर्ष की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण

वर्ष 2024–25 में कृषि विज्ञान केन्द्र, कासगंज के वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन से श्री हरी सिंह ने अपने खेत पर एकीकृत कृषि प्रणाली (Integrated Farming System) का व्यावहारिक मॉडल अपनाया। इसमें फसल उत्पादन, पशुपालन, चारा उत्पादन, सब्जी उत्पादन, जैविक अपशिष्ट प्रबंधन, वर्मी–कम्पोस्ट, नाडेप खाद, जैविक उत्पाद एवं वर्षाजल संरक्षण को एक–दूसरे से जोड़ा गया। फसल अवशेष जैसे गेहूँ का भूसा एवं धान का पुआल पशु आहार के रूप में उपयोग किए जाते हैं, जबकि पशुओं के गोबर को बायोगैस संयंत्र में डालकर ऊर्जा का उत्पादन किया जाता है। बायोगैस का उपयोग घरेलू आवश्यकताओं के साथ–साथ आटा चक्की चलाने में किया जा रहा है। बायोगैस से प्राप्त स्लरी को जैविक खाद के रूप में खेत में प्रयोग किया जाता है। साथ ही वर्मी–कम्पोस्ट एवं नाडेप खाद के प्रयोग से जैविक पदार्थ एवं पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण बढ़ा तथा मृदा उर्वरता में सुधार हुआ।

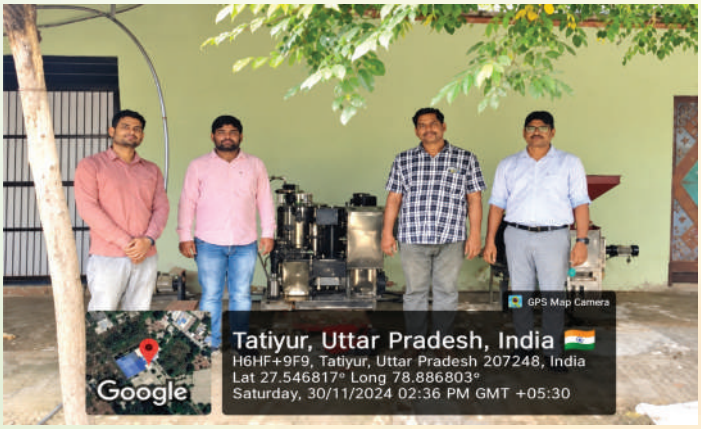

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय मे वृद्धिः

तकनीकी हस्तांतरण के बाद वर्तमान में श्री हरी सिंह धान, गेहूँ एवं मक्का के साथ विभिन्न सब्जियों की खेती तथा दो गाय एवं एक भैंस का पालन कर रहे हैं। उन्नत कृषि तकनीकों, एकीकृत कृषि प्रणाली, जैविक खाद एवं वैज्ञानिक पशुपालन को अपनाने से उनकी शुद्ध वार्षिक आय वर्ष 2025–26 में ₹ 173000 हो गई, जो पूर्व की आय ₹ 95500 की तुलना में लगभग 1.8 गुना है। इस प्रकार उनकी शुद्ध आय में लगभग ₹ 77500 प्रति वर्ष की वृद्धि हुई। वर्मी–कम्पोस्ट, नाडेप खाद एवं बायोगैस स्लरी के प्रयोग से खेती की लागत कम करने तथा मृदा स्वास्थ्य सुधारने में सहायता मिली। बायोगैस आधारित आटा चक्की के संचालन से जैविक अपशिष्ट का उपयोगी रूपांतरण तथा स्थानीय स्तर पर ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित हुई।

तकनीकी का क्षेत्र विस्तारः

श्री हरी सिंह की सफलता से प्रभावित होकर आसपास के कृषकों ने भी एकीकृत कृषि प्रणाली, उन्नत कृषि तकनीकों, जैविक खाद एवं पशुपालन को अपनाना शुरू किया है। वर्तमान में लगभग 60 हेक्टेयर क्षेत्रफल में अन्य कृषकों द्वारा इन तकनीकों को अपनाया जा रहा है। इससे कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा हस्तांतरित तकनीकों का व्यापक प्रसार हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रियाः



श्री हरी सिंह के अनुसार, कृषि विज्ञान केन्द्र कासगंज के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से नवीनतम कृषि तकनीकों को अपनाने से फसल उत्पादन एवं आय में लगभग 1.8 गुना वृद्धि हुई, खेती की लागत में कमी आई तथा मृदा स्वास्थ्य में सुधार हुआ। बायोगैस संयंत्र से आटा चक्की चलाने से पशु अपशिष्ट का बेहतर उपयोग एवं ऊर्जा की बचत हुई। एकीकृत कृषि प्रणाली ने कृषि, पशुपालन, जैविक खाद एवं ऊर्जा उत्पादन को एक–दूसरे से जोड़कर उनकी कृषि व्यवस्था को अधिक टिकाऊ एवं लाभकारी बनाया है।

आत्मनिर्भरता की नई राहः एकीकृत प्राकृतिक खेती और पशुपालन से आर्थिक क्रांति

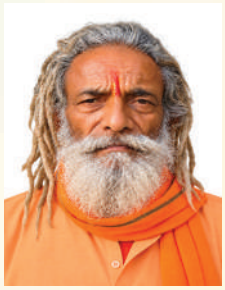

कृषक का नाम	:	श्री केहरी सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री हुकुम सिंह
ग्राम	:	नौगवा
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नम्बर	:	8954184679

श्री केहरी सिंह, ग्राम–नौगवा, विकास खण्ड– कासगंज, जनपद–कासगंज के प्रगतिशील किसान हैं। इनका परिवार खेती व पशुपालन पर निर्भर हैं। इनके पास खेती योग्य कुल 2.5 हे. भूमि है तथा इनकी शैक्षिक योग्यता दसवीं तक है। श्री सिंह पूर्व में धान, गेहूं, मक्का, के साथ बाजरा, उरद, मटर, एवं सरसों की खेती करने के साथ–साथ तीन गाय एवं एक भैस पालते थे जिससे उन्हें प्रति वर्ष रू० 254000 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2024-25 के पश्चात् जनपद कासगंज के एक प्रगतिशील किसान के जीवन में उस समय एक बड़ा सकारात्मक बदलाव आया, जब वे कृषि विज्ञान केंद्र, कासगंज के वैज्ञानिको के संपर्क में आए, और उनके कुशल मार्गदर्शन में, उन्हें राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना के अंतर्गत आयोजित विभिन्न उन्नत प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से इनके प्रक्षेत्रों (खेतों) पर नई कृषि प्रौद्योगिकियों के व्यावहारिक परीक्षण, फसलों की उन्नत किस्मों (प्रजातियों) के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन और किसान प्रक्षेत्र दिवस



जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन वैज्ञानिक परीक्षणों और प्रदर्शनों के उत्साहजनक व लाभकारी परिणामों को अपनी आँखों से देखकर वे बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने इन आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपने खेतों पर पूर्ण रूप से अपनाना शुरू कर दिया। इसके साथ ही, एकीकृत



कृषि प्रणाली के तहत पशुपालन को विशेष बढ़ावा देने के उद्देश्य से उन्होंने 8 गायों तथा 2 भैंसों का पालना भी शुरू किया। पशुपालन से प्राप्त होने वाले गोबर और गोमूत्र के सर्वोत्तम उपयोग के लिए उन्होंने अपने प्रक्षेत्र पर एक आधुनिक वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) यूनिट की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, केंद्र के वैज्ञानिकों के तकनीकी सौजन्य से उन्होंने जीवामृत, बीजामृत, घन जीवामृत तथा फसलों को हानिकारक कीड़ों एवं गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने के लिए रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र और खट्टी छाछ या मट्ठा जैसे प्रभावी प्राकृतिक घोलों (जैविक उत्पादों) को तैयार करने का सघन प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान में वे इन सभी जैविक व प्राकृतिक घटकों का नियमित निर्माण कर अपने खेतों में सफलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनकी खेती की लागत में भारी कमी आई है और वे एक सफल आत्मनिर्भर किसान के रूप में उभर रहे हैं।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरणः

वर्तमान में श्री सिंह धान, गेहूं, मक्का, बाजरा, सरसों, उड़द और मटर की वैज्ञानिक खेती के साथ–साथ 8 गायों और 2 भैंसों का पालन कर रहे हैं। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा सुझाए गए जैविक उत्पादों (वर्मी कम्पोस्ट, नाडेप खाद, जीवामृत आदि) के नियमित प्रयोग से भूमि में कार्बनिक पदार्थों का स्तर बढ़ा है, जिससे मृदा उर्वरता में सुधार हुआ है और खेती की लागत में भारी कमी आई है। इसके परिणामस्वरूप गुणवत्तापूर्ण उत्पादन बढ़ा है और उनकी शुद्ध वार्षिक आय (वर्ष 2024-25) पहले के ₹ 254000 से बढ़कर वर्तमान में ₹ 512560 जो पूर्व की तुलना में लगभग 2 गुना अधिक है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी का क्षेत्र विस्तारः



श्री सिंह की इस अभूतपूर्व सफलता से प्रेरित होकर आस–पास के किसानों ने भी नवीनतम कृषि तकनीकों के साथ–साथ वर्मी–कम्पोस्ट, नाडेप खाद, जीवामृत, बीजामृत और प्राकृतिक कीटनाशकों (नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र) का उपयोग शुरू कर दिया है। इसके फलस्वरूप, क्षेत्र के लगभग 154 हेक्टेयर में आधुनिक कृषि और उन्नत पशुपालन का तेजी से विस्तार हो रहा है।

कृषक प्रतिक्रियाः

कृषक के अनुसार, कृषि विज्ञान केंद्र, कासगंज के कृषि वैज्ञानिकों से मिली राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना के अंतर्गत आयोजित विभिन्न उन्नत प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकों की जानकारी और उन्हें खेतों में लागू करने से फसल की पैदावार बहुत अच्छी हुई है। इसके साथ ही उनकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हुई है, जिससे उनके रहन–सहन और जीवन स्तर में काफी सुधार आया है।

फसल चक्र एवं सहफसली खेती के माध्यम से उत्पादन, उत्पादकता एवं कृषक आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री गणेश सिंह
पिता/पति का नाम	:	श्री चरन सिंह
ग्राम	:	रामपुर
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नंबर	:	8006653176



वर्ष 2024–25 से पूर्व श्री गणेश सिंह परंपरागत कृषि पद्धतियों के माध्यम से मुख्यतः धान, गेहूँ एवं मक्का की खेती करते थे। कृषक के पास स्वयं का सिंचाई साधन उपलब्ध होने के बावजूद फसल चक्र, फसल विविधीकरण एवं वैज्ञानिक फसल प्रबंधन तकनीकों का समुचित उपयोग नहीं किया जा रहा था। इसके कारण उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता था तथा कृषि से प्राप्त वार्षिक शुद्ध आय अपेक्षाकृत कम थी। परंपरागत कृषि प्रणाली के अंतर्गत वर्ष 2024–25 से पूर्व कृषक की कुल वार्षिक शुद्ध आय लगभग ₹ 78,598 थी। कृषक द्वारा मुख्यतः एकल फसल प्रणाली अपनाए जाने के कारण वर्षभर भूमि का प्रभावी उपयोग नहीं हो पाता था और अतिरिक्त आय के अवसर भी सीमित थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण

वर्ष 2025–26 में श्री गणेश सिंह ने कृषि विज्ञान केन्द्र, कासगंज के वैज्ञानिको से संपर्क किया तथा अपने साथ ग्राम रामपुर के किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र की तकनीकी गतिविधियों से जोड़ने एवं अंगीकृत कराने का अनुरोध किया। इसके पश्चात कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा ग्राम रामपुर में कृषकों के लिए विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, कृषक गोष्ठियाँ, प्रदर्शन एवं जागरूकता कार्यक्रम का समय समय पर आयोजन किया। श्री गणेश सिंह के प्रक्षेत्र पर भी अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र प्रशिक्षण का आयोजन किया। इन गतिविधियों के माध्यम से किसानों को नवीन एवं उन्नत फसल किस्मों, गुणवत्तापूर्ण बीज, वैज्ञानिक फसल प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग,



खरपतवार प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन तथा फसल में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोगों के समेकित प्रबंधन की जानकारी प्रदान की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा कृषक को पारंपरिक फसल चक्र में परिवर्तन करते हुए धानदृगेहूँ के स्थान पर धान–गेहूँ–सब्जी मटर–मक्का जैसी विविधीकृत फसल प्रणाली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इसके साथ ही हरी खाद के रूप में ढेंचा का समावेश करने की तकनीक भी बताई गई। कृषक को फसल एवं मृदा की आवश्यकता के अनुसार संतुलित मात्रा में उर्वरकों के प्रयोग, समयानुसार सिंचाई तथा खरपतवार एवं कीट–रोग प्रबंधन के संबंध में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

इन तकनीकों के अपनाने से कृषक को उपलब्ध भूमि का वर्षभर बेहतर उपयोग करने, उत्पादन लागत को नियंत्रित करने, फसल उत्पादकता बढ़ाने तथा एक से अधिक फसलों से आय प्राप्त करने का अवसर मिला।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि का विवरण

वर्ष 2024–25 में श्री गणेश सिंह द्वारा पारंपरिक फसल चक्र के अंतर्गत मुख्यतः धान एवं गेहूँ की खेती की गई, जिससे उन्हें कुल ₹ 78,598 की शुद्ध आय प्राप्त हुई। वर्ष 2025–26 में कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त तकनीकी मार्गदर्शन को अपनाते हुए कृषक ने फसल विविधीकरण एवं सहफसली प्रणाली को बढ़ावा दिया। विशेष रूप से गेहूँ. सब्जी मटर की सहफसली को अपनाने से कुल ₹ 130,710 की आय प्राप्त हुई। इस प्रणाली से एक ही क्षेत्रफल में दो फसलों से आय प्राप्त होने के साथ–साथ भूमि एवं अन्य कृषि संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग संभव हुआ। इसी वर्ष कृषक ने लगभग 2.5 एकड़ क्षेत्रफल में फसल चक्र के अंतर्गत चार फसलों को शामिल किया तथा विभिन्न फसलों से कुल ₹ 2,17,977 की आय प्राप्त की। साथ ही ढेंचा को हरी खाद के रूप में अपनाकर मृदा में जैविक पदार्थ की मात्रा बढ़ाने एवं मृदा स्वास्थ्य में सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाया।

वर्ष 2025–26 में कृषक ने मक्का को भुट्टा एवं अन्य उपयोगों के लिए उगाकर अतिरिक्त आय प्राप्त की। इसके साथ ही फसल चक्र में चार फसलों को शामिल किया गया तथा नई तकनीक के रूप में हरी खाद एवं सहफसली प्रणाली में गेहूँ. मटर को अपनाया गया। इस विविधीकृत फसल प्रणाली के कारण वर्षभर भूमि का प्रभावी उपयोग हुआ तथा कोई भी कृषि क्षेत्र लंबे समय तक खाली नहीं रहा।

कृषक प्रतिक्रिया

इस प्रकार श्री गणेश सिंह ने वैज्ञानिक फसल चक्र, फसल विविधीकरण, सहफसली एवं हरी खाद के समावेश से कृषक की कृषि आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और वर्ष 2025–26 में कुल ₹ 2,75,123 की शुद्ध आय प्राप्त हुई। यह आय पारंपरिक कृषि प्रणाली से प्राप्त ₹ 78,598 की शुद्ध आय की तुलना में लगभग 2.5 गुना अधिक है।

बरसात में तरबूज उगाकर किसान ने खोली प्रगति की नई राह



कृषक का नाम	:	श्री सतीश चन्द्र
पिता/पति का नाम	:	श्री कन्हीलाल
ग्राम	:	बहटा
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नंबर	:	9719061413
तकनीकी हस्तक्षेप	:	2025–26

गांव बहटा, मोहनपुरा (कासगंज) के प्रगतिशील किसान श्री सतीश चन्द्र पहले केवल गर्मी के मौसम में तरबूज की खेती करते थे, जिससे सीमित आय ही प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

वर्ष 2025 में श्री सतीश चन्द्र कृषि विज्ञान केन्द्र, मोहनपुरा के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये तथा तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् ऑफ सीजन (बरसात के मौसम) में तरबूज उगाने की आधुनिक तकनीक अपनाने का निर्णय लिया। वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में बंगलूरू से विशेष किस्म का बीज मंगाकर एक एकड़ पांच बीघा खेत में आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए तरबूज की खेती की शुरुआत की गई। कीट व रोग प्रबन्धन हेतु आई0पी0एम0 तकनीकों के प्रयोग, विशेष रूप से थ्रिप्स, माईट, डाउनी मिल्ड्यू व पाउडरी मिल्ड्यू जैसी बरसाती चुनौतियों से निपटने की तकनीकी जानकारी भी उपलब्ध कराई गई।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त तकनीकी मार्गदर्शन, लगातार कड़ी मेहनत और देखभाल का परिणाम यह रहा कि बरसात के बावजूद तरबूज की पैदावार गर्मी के सीजन जैसी ही प्राप्त हुई। खेतों में लगभग तीन किलो वजन तक के तरबूज लगे हैं तथा एक बीघा खेत में करीब 10 से 12 क्विंटल तरबूज पैदा होने का अनुमान है। फसल 15 सितंबर तक तैयार होकर बाजार में 30 से 35 रुपये प्रति किलो के भाव पर बिकेगी। ऑफ सीजन होने के कारण बेहतर दाम मिलने की पूरी संभावना है।







अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीकी क्षेत्र/ विस्तार

श्री सतीश चन्द्र की इस सफलता के बाद क्षेत्र के अन्य कृषकों में भी बरसाती तरबूज की खेती के प्रति रुचि बढ़ी है। आसपास के जनपदों में उनके अलावा अभी तक किसी अन्य किसान ने यह खेती नहीं की है, जिससे उनका यह नवाचार किसानों के लिए आकर्षण का केंद्र बन रहा है। कुछ किसानों और आढ़तियों ने गांव आकर बरसाती तरबूज की खेती के बारे में जानकारी भी ली है।

विशेषज्ञ की रायः



कृषि विज्ञान केन्द्र, मोहनपुरा के प्रभारी डॉ. विकास रंजन चौधरी ने बताया कि फसल विविधीकरण पर लगातार जोर दिया जा रहा है। लगातार एक ही फसल चक्र अपनाने से मिट्टी के पोषक तत्व खत्म होने लगते हैं, जबकि फसल बदलने से मिट्टी संतुलित व उपजाऊ बनी रहती है और कीटों का जीवन चक्र भी टूट जाता है। उनके अनुसार खरीफ में तरबूज की खेती एक सकारात्मक कदम है यदि किसान पारंपरिक गेहूं–धान के चक्र से हटकर आधुनिक व बेमौसमी खेती अपनाएं और कृषि विज्ञान केन्द्रों से मिलने वाले मार्गदर्शन का लाभ उठाएं, तो उनकी आय कई गुना बढ़ सकती है।

कृषक प्रतिक्रियाः

श्री सतीश कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर प्राप्त तकनीकी मार्गदर्शन से अत्यंत संतुष्ट हैं तथा अपने इस नवाचार से क्षेत्र के अन्य किसानों को प्रेरित करने पर प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।

परंपरागत मक्का-धान से सब्जी उत्पादन की ओर बढ़े कदम, बढ़ी खेती की लाभप्रदता



कृषक का नाम	:	श्री होडिल सिंह
पिता का नाम	:	श्री मुरली सिंह
ग्राम	:	रामपुर
विकास खण्ड	:	कासगंज
जनपद	:	कासगंज
मोबाइल नम्बर	:	9627344977
सब्जी उत्पादन क्षेत्र	:	0.70 हेक्टेयर
तकनीकी हस्तक्षेप	:	वर्ष 2024–25

ग्राम रामपुर, विकास खण्ड कासगंज के कृषक श्री होडिल सिंह पहले अपने खेत में मुख्यतः परंपरागत मक्का एवं धान की खेती करते थे। लंबे समय से चली आ रही इस फसल प्रणाली में भी वे अपनी कृषि आय को और अधिक लाभकारी एवं नियमित बनाना चाहते थे। इसी क्रम में उनका संपर्क कृषि विज्ञान केन्द्र, कासगंज के वैज्ञानिकों से हुआ।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तांतरण



कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त तकनीकी मार्गदर्शन से प्रेरित होकर श्री होडिल सिंह ने वर्ष 2024–25 में लगभग 0.70 हेक्टेयर क्षेत्र में सब्जी उत्पादन अपनाया। उन्होंने बाजार की मांग एवं मौसम के अनुसार टमाटर, मिर्च, करेला एवं सब्जी मटर जैसी फसलों को शामिल किया। वैज्ञानिकों द्वारा कृषक को स्थानीय परिस्थितियों एवं बाजार की मांग को ध्यान में रखते हुए सब्जी आधारित फसल विविधीकरण अपनाने के लिए प्रेरित किया गया तथा समय–समय पर खेत पर जाकर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

विशेष रूप से नर्सरी प्रबंधन, आई एन एम, आई पी एम एवं आई डी एम को अपनाने से कृषक को स्वस्थ पौध तैयार करने तथा फसल में कीट एवं रोगों के प्रभाव को कम करने में सहायता मिली। इस प्रकार वैज्ञानिक तकनीकों के समन्वित प्रयोग से कृषक परंपरागत खेती से आगे बढ़कर अधिक व्यवस्थित एवं बाजारोन्मुख सब्जी उत्पादन की ओर बढ़े।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

सब्जी उत्पादन में नर्सरी प्रबंधन, समेकित पोषक तत्व प्रबंधन तथा समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन जैसी वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने से श्री होडिल सिंह को फसल उत्पादन को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करने में सहायता मिली। कृषक के अनुसार, सब्जी की खेती में प्रत्येक 100 रुपये के निवेश पर उन्हें लगभग 150 रुपये का प्रतिफल प्राप्त हुआ, अर्थात लगभग 50 रुपये का शुद्ध लाभ हुआ। इस तरह कृषक द्वारा बताए गए आंकड़ों के अनुसार निवेश पर लगभग 50 प्रतिशत का अतिरिक्त प्रतिफल मिल रहा है और लाभ–लागत अनुपात लगभग 1.50:1 बैठता है, जो परंपरागत मक्का–धान की खेती की तुलना में सब्जी उत्पादन को अधिक लाभकारी सिद्ध करता है। सब्जियों की विभिन्न फसलें अपनाने से कृषक को फसल के अनुसार अलग–अलग समय पर उत्पादन एवं बिक्री का अवसर भी प्राप्त हुआ है।

कृषक द्वारा अपनाई गई तकनीकी पहल एवं क्षेत्र विस्तार

श्री होडिल सिंह द्वारा अपनाई गई प्रमुख पहल परंपरागत मक्का–धान फसल प्रणाली में विविधीकरण कर सब्जी उत्पादन को शामिल करना है। उपलब्ध 0.70 हेक्टेयर क्षेत्र में एक ही प्रकार की परंपरागत फसलों पर निर्भर रहने के बजाय कृषक ने टमाटर, मिर्च, करेला एवं मटर जैसी विभिन्न सब्जियों को अपनाया। यह पहल क्षेत्र के छोटे एवं मध्यम जोत वाले अन्य किसानों के लिए फसल विविधीकरण एवं बाजारोन्मुख खेती की दिशा में एक उपयोगी उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

कृषक प्रतिक्रिया



श्री होडिल सिंह बताते हैं "पहले हम मुख्य रूप से मक्का और धान की खेती करते थे। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से सब्जी उत्पादन की तकनीक एवं नर्सरी प्रबंधन की जानकारी प्राप्त हुई। INM, कीट एवं रोग प्रबंधन की तकनीकों को अपनाने से सब्जी की खेती वैज्ञानिक तरीके से करने में मदद मिली। अब सब्जी उत्पादन से खेती अधिक लाभकारी लग रही है।" कृषक आगे भी उन्नत सब्जी उत्पादन तकनीकों को अपनाने तथा फसल विविधीकरण जारी रखने के लिए उत्साहित हैं।

समेकित फसल विविधीकरण से आय में वृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री लल्लू
पिता का नाम	:	श्री बदलू
ग्राम	:	नोनेरा
विकास खण्ड	:	खीरों
जनपद	:	रायबरेली
कुल भूमि	:	1.50 हेक्टेयर
फल एवं फूल उत्पादन क्षेत्रफल	:	0.80 हेक्टेयर

कृषक की सफलता की कहानी

फसल विविधीकरण में नयी फसलों या फसल प्रणालियों को परपंरागत कृषि उत्पादन में जोड़ने से छोटी भूमि पर ज्यादा आय ली जा सकती है। इस पद्धति को अपनाकर कृषक श्री लल्लू ने क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है। फूलों के साथ–साथ मधुमक्खी पालन एवं फल उत्पादन करके आर्थिक स्थिरता के साथ–साथ प्राकृतिक अपदाओं से उभरने की तकनीकी को अन्य किसानों के सामने प्रस्तुत किया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी सहयोग

कृषक श्री लल्लू ने केन्द्र के वैज्ञानिकों को समस्याओं से अवगत कराया। पुरानी प्रजातियों पर निर्भरता, रोग एवं कीट नियंत्रण प्रबंधन में कमी, अत्यधिक उर्वरकों को प्रयोग एवं पारंपरागत सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करने से किसान को आर्थिक क्षति हो रही थी। इन समस्याओं के निदान के लिए अन्य विभागों के साथ मिलकर प्रषिक्षण कार्यक्रम एवं अन्य सुविधायें को कृषकों उपलब्ध करायीं गयीं। जिससे कृषक की आय में वृद्धि हुई है।

समेकित फसल विविधीकरण प्रणाली

कृषक अपने सीमित संसाधनों का समझदारी से प्रयोग करके सतत् आय को सुनिश्चित किया है। पपीता, गुलाब, बेला, गेंदा और गर्मी में तैयार होने वाली नवरंग की खेती को मधुमक्खी पालन के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत किया है। लघु पौधशाला की स्थपना करके खेती में मुनाफा प्राप्त कर रहें है।

पपीते की खेती

पपीते की खेती कृषक वैज्ञानिक विधि से करता है। पर्णीय छिड़काव, सूक्ष्म सिंचाई पद्धति एवं फर्टीगेषन की तकनीक अपनाकर पर प्रति पौध ज्यादा उत्पादन ले रहे है। रोग एवं कीट नियंत्रण

के लिये फारमोन ट्रैप, के साथ–साथ नवीनतम एवं जैविक कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है। निरतंर आय सुनिश्चित करने के लिए पपीते की क्यारियों पर गेंदा की उन्नत प्रजातियाँ लगाने से अच्छी आमदनी एवं रोग नियंत्रण भी हो रहा है। उन्होंने लगभग 1000 पपीते पौधों का रोपण किया है।

पपीते की खेती से आय का विवरण

पौधों की संख्या	कुल रख–रखाव की लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1000	125000	375000	250000

मधुमक्खी पालन

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों आयोजन ग्राम नोनैरा में किया गया। कृषक को मधुमक्खी पालन की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। मधुमक्खी पालन करके मधु, पराग, प्रोपोलिस आदि का उत्पादन कृषक कर रहा है। फूलों की खेती मधु के उत्पादन में बढ़ोत्तरी कर रही है। निषेचन की मात्रा भी आस–पास के फसलों की बढ़ गयीं है। कृषक लगभग 100 मधुमक्खी पेटियों से उत्पादन ले रहा है।

मधुमक्खी पालन से आय का विवरण

क्र. सं.	मधु पेटियों की संख्या	कुल रख–रखाव की लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1	100	50000	130000	80000

बेला की खेती

बेला के पुष्पों का प्रयोग सजावट के साथ–साथ तेल उत्पादन में किया जाता है। फूल मार्च से अगस्त के मध्य आते है। इस समय अवधि में अन्य फूलों की उपलब्धता कम होती है। जिसके कारण बेला के फूल की बिक्री कर अच्छा मुनाफा प्राप्त होता है। रोग एवं कीट नियंत्रण आदि पर खर्च बहुत कम आता है। कृषक ने लगभग 500 बेला के पौधों को लगाया है।

बेला की खेती से आय का विवरणः

क्र. सं.	बेला के पौधों की संख्या	कुल रख–रखाव की लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1	500	30000	90000	60000





गुलाब की खेती

कट गुलाब की प्रजातियों के बारे में जानकारी कृषक को प्रदान की गयी। कृषक ने गुलाब की उन्नत प्रजाति टाप सीक्रेट की खेती आरम्भ किया है। गुलाब के फूल नवम्बर एवं मार्च एवं अप्रैल में बड़ी संख्या में आते है। कृषक ने रोग, कीट एवं सिंचाई प्रबंधन की उन्नत तकनीकों का समावेश करके उत्पादन में वृद्धि प्राप्त किया है।

गुलाब की खेती से आय का विवरण

क्र. सं.	गुलाब के पौधों की संख्या	कुल रख–रखाव की लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1	1000	150000	300000	150000





कृषक की प्रतिक्रिया

कृषक में एकीकृत फसल विविधीकरण को अपनाकर आय में वृद्धि प्राप्त की है। कृषि की उन्नत तकनीकें फर्टीगेशन, सूक्ष्म सिंचाई, समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन एवं जैविक संसाधनों का प्रयोग करके खेती की लागत को कम और उत्पादन को बढ़ाया है। आस–पास के कृषक उनके प्रक्षेत्र का भ्रमण करके जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

मुर्रा भैंस पालन एवं उन्नत संतति संवर्धन बना आय का साधन



कृषक का नाम	:	श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह
पिता का नाम	:	श्री आनंद सिंह
ग्राम	:	पूरे चिताई
विकास खण्ड	:	सरेनी
जनपद	:	रायबरेली

श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह ग्राम पूरे चिताई विकास खण्ड सरेनी, जनपद–रायबरेली के प्रगतिषील पशुपालक किसान हैं। उन्होंने उन्नत नस्ल की मुर्रा भैंसों के पालन एवं उनकी संतति को आगे बढ़ाने को अपनी आय का प्रमुख साधन बनाया है। वर्तमान में उनके पास 6 अच्छी नस्ल की मुर्रा भैंसे एवं 6 मादा बछियां हैं। उन्होंने उच्च गुणवत्ता वाली मुर्रा भैंसों को हरियाणा के रोहतक जिले से लाकर अपने फार्म पर पषु पालन प्रारम्भ किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली–2 द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन

श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली–2 के विषेषज्ञों के निरंतर संपर्क में रहते हैं तथा पशुपालन से संबंधित विभिन्न तकनीकी जानकारी प्राप्त करते हैं। वे समय–समय पर आयोजित पशुपालन प्रषिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर पशुओं के पोषण, स्वास्थ्य, प्रजनन एवं वैज्ञानिक प्रबंधन एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करते हैं। विषेषज्ञों की सलाह के अनुसार वे पशुओं के लिए संतुलित आहार एवं गुणवत्तापूर्ण हरे चारे की व्यवस्था करते हैं।

चारा उत्पादन एवं वैज्ञानिक पशुपालन

कृषक के पास कुल 1.5 हेक्टेयर भूमि है, जिसमें लगभग 1.0 हेक्टेयर में फसल उत्पादन तथा 0.50 हेक्टेयर में हरे चारे का उत्पादन किया जाता है। वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता बनाए रखने के लिए उनके द्वारा नेपियर घास, बरसीम एवं ज्वार का उत्पादन किया जाता है। इससे पशुओं को वर्षभर पर्याप्त हरा चारा उपलब्ध रहता है तथा दुग्ध उत्पादन को बनाए रखने में सहायता मिलती है।



तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वैज्ञानिक पशुपालन तकनीकों को अपनाने एवं उन्नत मुर्रा नस्ल की भैंसों के पालन से कृषक को दुग्ध बिक्री से एक वर्ष में लगभग रू. 8,12,000/– की आय प्राप्त हुई। पशुपालन में एक वर्ष के दौरान लगभग रू. 3,90,000/– का कुल व्यय हुआ। इस प्रकार दूध बिक्री से लगभग रू. 4,22,000/– की शुद्ध आय प्राप्त हुई। इसके साथ ही एक वर्ष में 6 मादा बछियों/काटियो का जन्म हुआ, जिनकी लगभग रू. 50,000/–प्रति बछिया के अनुसार कुल अनुमानित कीमत रू. 3,00,000/– है। इस प्रकार कृषक की आय के साथ–साथ पशुधन संपदा में भी वृद्धि हुई।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी

श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह द्वारा अपनाई गई उन्नत मुर्रा भैंस पालन, गुणवत्तापूर्ण चारा उत्पादन एवं उन्नत संतति संवर्धन की तकनीक से आसपास के अन्य कृषक भी प्रेरित हो रहे हैं। कृषक द्वारा प्राप्त अनुभव एवं वैज्ञानिक पशुपालन के प्रति उनकी रूचि अन्य पशुपालकों के लिए प्रेरणास्रोत बन रही है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री राजेन्द्र बहादुर सिंह का कहना है कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर विषेषज्ञों की सलाह एवं पशुपालन प्रशिक्षण प्राप्त करने से उन्हें वैज्ञानिक तरीके से भैंस पालन करने में काफी सहायता मिली है। उन्नत नस्ल की मुर्रा भैंसों के पालन के साथ उनकी अच्छी संतति तैयार हो रही है, जिससे भविष्य में पशुधन एवं आय दोनों में वृद्धि की संभावना है। उनका मानना है कि गुणवत्तापूर्ण चारा, उचित पशु प्रबंधन एवं उन्नत नस्ल का चयन पशुपालन को लाभकारी व्यवसाय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।



बकरी पालन से समृद्धि एवं आय में वृद्धि



कृषक का नाम	:	मो. अनिल अहमद खान
पिता का नाम	:	स्व. मोहम्मद लेइक
ग्राम	:	पल्टू टांडा
विकास खण्ड	:	रायबरेली
जनपद	:	रायबरेली
मोबाइल नम्बर	:	9956441786

श्री मो0 अनिल अहमद खान, ग्राम पल्टू टांडा, जनपद रायबरेली के प्रगतिशील कृषक हैं। कृषक द्वारा पूर्व में 2–3 बकरियों का पालन छोटे स्तर पर किया जाता था। बकरी पालन से होने वाली आय एवं रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए कृषक ने कृषि विज्ञान केन्द्र, पल्टीखेड़ा रायबरेली से संपर्क कर प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत वर्ष 2025 में बकरी पालन को व्यावसायिक स्तर पर अपनाया।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी हस्तांतरण का विस्तृत विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र पल्टीखेड़ा रायबरेली द्वारा कृषक को वैज्ञानिक बकरी पालन के संबंध में प्रषिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान उन्नत प्रजाति का चयन, आवास प्रबंधन, संतुलित आहार, हरे चारे की उपलब्धता, स्वच्छता, टीकाकरण, कृमिनाशक दवा, रोग प्रबंधन एवं प्रजनन संबंधी जानकारी दी गई। कृषक द्वारा प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने बकरी पालन व्यवसाय में अपनाया गया। वर्तमान में कृषक के पास बरबरी प्रजाति की 25 मादा एवं 3 नर बकरियां है। कृषक के पास कुल 2000 वर्ग मीटर भूमि उपलब्ध है, जिसमें लगभग 250 वर्ग मीटर में बकरी आवास/शेड, 750 वर्ग मीटर में खुला क्षेत्र तथा 1000 वर्ग मीटर में चारा उत्पादन किया जा रहा है। इस प्रकार कृषक द्वारा बकरी पालन के साथ–साथ चारा उत्पादन को भी व्यवस्थित रूप से अपनाया गया है।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरान्त आय में वृद्धि का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद कृषक द्वारा बकरी पालन को बड़े स्तर पर अपनाया गया, जिससे आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वर्तमान में बकरी पालन से कृषक को लगभग रू. 3,00,000 वार्षिक सकल आय प्राप्त हो रही है। बकरी पालन में चारा, दवा/पशु चिकित्सा एवं श्रम आदि पर लगभग रू0 1,20,000 वार्षिक व्यय होता है। इस प्रकार कृषक को लगभग रू. 1,80,000 की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनाई गई तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री अनिल अहमद खान द्वारा वैज्ञानिक तरीके से बरबरी बकरी पालन करने तथा इससे प्राप्त आय को देखकर आस–पास के कृषक भी बकरी पालन की उन्नत तकनीकों के प्रति आकर्षित हुए हैं। कृषक द्वारा अन्य पशुपालकों को वैज्ञानिक बकरी पालन, संतुलित आहार, स्वच्छ आवास, टीकाकरण एवं रोग प्रबंधन के संबंध में जानकारी दी जा रही है।

कृषक प्रतिक्रिया

कृषक श्री मो. अनिल अहमद खान के अनुसार, कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन से उन्हें बकरी पालन को वैज्ञानिक एवं व्यवसायिक तरीके से करने में काफी सहायता मिली। बकरी पालन को बड़े स्तर पर अपनाने से उनकी आय में वृद्धि हुई है तथा यह उनके लिए एक लाभकारी एवं रोजगारपरक व्यवसाय सिद्ध हो रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन एवं वैज्ञानिक बकरी पालन तकनीक अपनाने से कृषक की आय में वृद्धि हुई तथा बकरी पालन आज उनके लिए सफल एवं लाभकारी व्यवसाय का माध्यम बन गया है।

बेसहारा गायों का सदुपयोग कर बना समृद्ध किसान



कृषक का नाम	:	श्री शिवनाथ
पिता/पति का नाम	:	श्री प्रेमलाल
ग्राम	:	सहतावनपुरवा
विकास खण्ड	:	मैथा
जनपद	:	कानपुर देहात
मोबाइल नम्बर	:	8858963953

श्री शिवनाथ ग्राम सहतावनपुरवा विकास खण्ड मैथा जनपद कानपुर देहात वर्ष 2023 से पूर्व 2 बीघा खेती का कार्य करने के उपरांत राजस्थान प्रदेश की राजधानी जयपुर मे एक प्राइवेट कम्पनी में 10000 रूपया प्रति माह अर्थात 120000 रूपया प्रतिवर्ष पर काम करते थे जिसमें परिवार का भरण पोषण करना अत्यन्त कठिन होता था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री शिवनाथ वर्ष 2023 में कृषि विज्ञान केन्द्र दलीपनगर कानपुर देहात के सम्पर्क मे आये तथा वहॉ पर पशुपालन विषय के अलावा अन्य विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त किये। तत्पश्चात इन्होने केन्द्र से व्यवसायिक डेयरी फार्मिग पर प्रशिक्षण प्राप्त किये जिसमे पशु की नस्ल प्रवंधन, पशु आहार बनाने की तकनीक, पशु प्रबंधन, आवास प्रबंधन, पशु उत्पाद बनाने की तकनीक, स्वास्थ्य प्रबंधन, बॉझपन एवं बीमारियों की रोकथाम, उत्पाद विपणन आदि विषयों पर जानकारी ली। श्री शिवनाथ आर्थिक तंगी के कारण डेयरी फार्मिग का कार्य नही कर पा रहे थे फिर श्री शिवनाथ ने कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह से बेसहारा अन्ना (अवारा) गायों को अपनाया जिसमे 4 दुधारू एवं 6 गर्भित गाय (साहीवाल, हरियाणा एवं जर्सी) के साथ डेयरी फार्मिग का व्यवसाय प्रारम्भ किया। जिसके अन्तर्गत दूध एवं दूध के उत्पाद मावा (खोया) को बना कर विभिन्न बाजारों में बेचना शुरू किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के उपरान्त आय वृद्धि का विवरण

वर्ष 2023 के पूर्व इनके पास कोई पशु नहीं थे जिससे इनको पशुपालन से कोई आय प्राप्त नहीं होती थी। डेयरी फार्मिग के पश्चात वर्ष 2023–24 मे 16 लीटर दूध से 4 किलोग्राम मावा (खोया) प्रतिदिन बनता था जो रूपया 320 की दर से विक्रय कर 1280 रू0 प्रतिदिन अर्थात रू0 460800 प्रतिवर्ष प्राप्त होता था। आज वर्ष 2024–25 में श्री शिवनाथ के पास 10 गाय एवं 22 बछडे एवं बछिया मौजूद है जिसमे से 6 गर्भित है। आज प्रतिदिन 30 किलो दूध से 7 किलोग्राम मावा (खोया) प्रतिदिन बनता है जो 370 रू0 की दर से विक्रय कर 2590 रूपया प्रतिदिन अर्थात वर्ष के अन्त तक






लगभग 932400 अर्जित होता है। जबकि पशुपालन पर वर्षभर का कुल व्ययभार रू0 372900 था। इस प्रकार इनको प्रतिवर्ष रूपये 559500 की शुद्ध आय प्राप्त हुयी जो कि पूर्व की प्राईवेट नौकरी की तुलना मे बहुत अधिक था।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीक/क्षेत्र विस्तार

श्री शिवनाथ ने अपनी आय एवं जीवन स्तर में सुधार/बढ़ोत्तरी करने के उपरांत आस पास के लगभग 8 किसानों को डेरी व्यवसाय हेतु बेसहारा गायों को पालकर दुग्ध उत्पादन व्यवसाय के लिए प्रेरित किया। जिससे आस पास के किसान लाभान्वित हुये।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री शिवनाथ अपने परिवार के साथ रहकर एक सफल डेयरी फार्मिग के साथ–साथ 2 बीघा मे जैविक खेती कर रहे है। जिससे उनकी आय में वृद्धि हुयी एवं परिवार का भरण पोषण हो रहा है।

प्राकृतिक खेती से मिली सफलता एवं खेती में आय की वृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री रमाकांत त्रिपाठी
पिता का नाम	:	कृष्ण दत्त त्रिपाठी
ग्राम	:	शिवराजपुर
विकास खण्ड	:	मलवां
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नम्बर	:	9839009549

श्री रमाकांत त्रिपाठी ने 2018 से प्राकर्तिक खेती करना प्रारम्भ किया इसके पूर्व धान–गेहूं की खेती पूर्व पद्दति से करते थे।

कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण

वर्ष 2019–20 में श्री रमाकांत त्रिपाठी जी ने कृषि विज्ञान केंद्र एवं अन्य संस्थानों से संपर्क किया। तत्पश्चात् वैज्ञानिकों ने ग्राम शिवराजपुर में भ्रमण किया और वैज्ञानिकों के द्वारा वहां पर प्राकर्तिक खेती की जागरूकता गोष्ठी एवं प्रशिक्षण संपन्न कराये गए श्री रमाकांत त्रिपाठी जी पहले तिल, सरसों की प्राकर्तिक खेती 2.5 एकड़ में करते थे परन्तु अब धान, गेहूं, सरसों, तिल, गन्ना सभी 6.0 एकड़ में करते हैं।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि

वर्ष 2017–18 में श्री रमाकांत त्रिपाठी जी ने धान–गेहूं की परम्परागत खेती की थी, जिसमें लागत अधिक और उत्पादन कम मिलता था और बिक्री दर भी कम थी। 6.0 एकड़ में 1–1.5 लाख की शुद्ध आय होती थी। वर्ष 2018–19 में एक देसी गाय रखकर 2.5 एकड़ से प्राकतिक खेती प्रारंभ की, धान और गेहूं का उत्पादन किया। 2019–20 में 6.0 एकड़ में धान, गेहूं, सरसों



फसल की प्राक्रतिक विधि से खेती प्रारंभ किया जिसमें 1.80 लाख आय प्राप्त हुई। 2021–22 से 2025–26 तक 6.0 एकड़ में धान, गेहूं, सरसों, गन्ना, तिल, मूंग, उर्द, धनिया, मिर्च, चना का उत्पादन ले रहे हैं। 2024–25 में शुद्ध लाभ 2.50–3.00 लाख प्राप्त किया। श्री रमाकांत त्रिपाठी जी को प्रदेश स्तरीय सम्मान मा० मुख्यमन्त्री जी द्वारा प्रदान किया गया हैं।





अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी व क्षेत्र विस्तार

श्री रमाकांत त्रिपाठी जी के द्वारा अपनाई गई प्राकर्तिक खेती से प्रेरित होकर कृषको ने प्राकृतिक खेती को अपनाना प्रारम्भ किया कृषक प्रेरित हैं कि प्राकर्तिक खेती में लागत न्यून होने और उत्पाद की बिक्री अधिक दर पर होने से शुद्ध आय अधिक प्राप्त होती हैं।

कृषक प्रतिक्रियाः

श्री रमाकांत त्रिपाठी जी द्वारा बताया गया कि प्राकृतिक खेती से लागत शून्य होने तथा घर की सामग्री से खेती होने से जो उत्पाद होता हैं उसकी उच्च दर पर बिक्री होती है जैसे चावल रु. 200/किलो, दाले रु. 200/किलो, गुड रु. 100/किलो, गेहूं रु. 56/किलो, तिल रु. 250/किलो में बिकता है भूमि स्वस्थ्य लाभ भी होता हैं।

खरीफ प्याज से दोहरी कमाई - नर्सरी और उत्पादन एक साथ



कृषक का नाम	:	श्रीमती कान्ति देवी
पिता का नाम	:	श्री शशि भूसन सिंह
ग्राम	:	औंग
विकास खण्ड	:	मलवां
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नम्बर	:	7054230036

कृषि विज्ञानं केंद्र के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण

वर्ष 2020–21 में श्री मती कान्ति देवी जी 2.00 हें. प्रक्षेत्र में लहसुन, प्याज व अन्य सब्जियों के खेती करती थी जिससे इनको लगभग 3–4 लाख की आय प्राप्त होती थी। इन्होने बाद में खरीफ में प्याज की खेती शुरू की जिससे तकनीकी के आभाव में उत्पादन 150–200 कु. उत्पादन होता था। श्रीमति कान्ति देवी ने कृषि विज्ञान केंद्र एवं अन्य संस्थानों से संपर्क किया। श्रीमती कान्ति देवी जी ने कृषि विज्ञानं के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया तथा वैज्ञानिको के द्वारा बताये गए वैज्ञानिक विधि से खरीफ प्याज की खेती शुरू की। तद्पशात वैज्ञानिको ने ग्राम औंग में भ्रमण कर प्रशिक्षण तथा गोष्ठी का आयोजन संपन्न कराये गए।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धी



श्रीमती कान्ति देवी जी पहले लहसून, प्याज व अन्य सब्जियों की खेती छोड़कर सिर्फ खरीफ प्याज की खेती शुरू की जिससे इनको 5–6 लाख रु. की शुद्ध आय होती थी। कृषि विज्ञानं केंद्र के वैज्ञानिको के द्वारा बताये गये तकनीकी विधि से खरीफ की खेती करने से उत्पादन में वृधि के साथ–साथ आय में भी अच्छी वृधि प्राप्त की। वर्तमान में श्रीमती कान्ति देवी जी 2.00 हे. में सिर्फ खरीफ प्याज की खेती वैज्ञानिक विधि से कर रही है तथा उत्पादन 250–300 कु. के साथ शुद्ध आय 15–18 लाख प्रति वर्ष प्राप्त कर रही है।





अन्य कृषको द्वारा अपनायी गई तकनीकी व क्षेत्र विस्तार

श्रीमती कान्ति देवी जी के द्वारा खरीफ में प्याज की खेती से आस पास क्षेत्र के कई किसान प्रेरित हुए तथा खरीफ प्याज की खेती वैज्ञानिको के द्वारा बताये गये तकनीकी अपनाने से उत्पादन के साथ साथ आये में भी वृधि प्राप्त की।

कृषक प्रतिक्रिया

श्रीमती कान्ति देवी जी ने बताया कि खरीफ प्याज करने का सबसे ज्यादा फायदा उत्पादित प्याज के भंडारण करने की आवश्यकता नहीं होती है और बहुत ही कम समय में (60–70 दिन) में फसल तैयार हो जाती हैं और रेट भी अच्छा मिल जाता है। खरीफ प्याज के नर्सरी वैज्ञानिक विधि से तैयार करने में बहुत ही आसानी हो जाती है।

फसल चक्र सब्जी मटर-गेहूं अपनाकर खेती से मिली सफलता



कृषक का नाम	:	श्री राकेश कुमार शुक्ला
पिता का नाम	:	श्री शिव शंकर
ग्राम	:	अचिन्तपुर, पिटाई
विकास खण्ड	:	हसवा
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नम्बर	:	9984820692

श्री राकेश शुक्ला 2018–19 तक परम्परागत ढंग से खेती करते थे इनके पास सिंचाई का साधन स्वयं का हैं परन्तु फसल चक्र एवं प्रबंधन उचित न होने से आय बहुत कम और खेती में लागत अधिक आयी थी। वर्ष 2018 से पूर्व आय रु. 2.50 लाख प्रतिवर्ष प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण

श्री राकेश शुक्ल जी वर्ष 2018–19 में परम्परगत विधि से केवल धन–गेहूं फसल चक्र से खेती करते थे। श्री शुक्ल जी ने कृषि विज्ञानं केंद्र के द्वारा आयोजित किये गए प्रशिक्षण व गोष्ठी में प्रतिभाग किया। केंद्र से तकनीकी जानकारी प्राप्त कर इन्होने वैज्ञानिकों द्वारा प्रेरित किये जाने के पश्चात् विभिन्न फसल चक्र को अपनाकर खेती करना प्रारम्भ किया, जिससे भूमि सुधार के साथ ही आय में भी वृधि दर्ज की गई।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि

वर्ष 2018–19 में धान–गेहूं की खेती करते थे और प्याज़ा की खेती जिससे 10–12 लाख की आय होती थी। वर्ष 2019–20 में कृषि विज्ञान केंद्र से तकनीकी मार्गदर्शन लेकर सब्जी मटर–गेहूं फसल चक्र की खेती प्रारम्भ की, तब से लगातार 2025–26 तक मटर–गेहूं फसल चक्र की खेती की। जिससे 4 हे० में मटर और गेहूं की खेती एक ही खेत में की,





जिससे शुद्ध आय 21 लाख प्राप्त की, साथ ही साथ प्याज़ की खेती भी प्रारम्भ किया वर्ष 2024–25 में शुद्ध आय लगभग 20–25 लाख रु० प्राप्त किया।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी व क्षेत्र विस्तार

श्री राकेश शुक्ला जी के द्वारा कृषि विज्ञानं केंद्र थारियाओं फतेहपुर से प्राप्त तकनीकी से सब्जी मटर–गेहूं फसल चक्र अपनाकर आय में जो वृद्वि की, उससे प्रेरित होकर गाँव तथा आस पास के क्षेत्र के 500 से अधिक कृषकों ने प्रेरित होकर इस फसल चक्र को अपनाया।

कृषक प्रतिक्रियाः

श्री राकेश शुक्ल जी का कहना हैं कि कृषि विज्ञान केंद्र फतेहपुर से फसल चक्र, खेत प्रबंधन, प्रजाति की जानकारी समय समय पर रोग, कीट के नियंत्रण पर सुझाव प्राप्त हुए। पूर्व की खेती से अब चार गुना से अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं, तकनीकी सबसे महत्वपूर्ण निवेश हैं।

खरीफ प्याज एवं विविधीकरण से बढी कृषक की आय एवं आर्थिक समृद्धि



कृषक का नाम	:	श्री राम सिंह पटेल (शशि भूषन सिंह)
पिता का नाम	:	श्री राम किशुन
ग्राम	:	औंग
विकास खण्ड	:	मलवां
जनपद	:	फतेहपुर
मोबाइल नम्बर	:	9936058016

श्री राम सिंह पटेल 2015–16 से पूर्व धान गेहूं की खेती करते थे। सिंचाई एवं कृषि यन्त्र इनके पास स्वयं के थे। श्री राम सिंह 0.50 एकड़ में खरीफ प्याज़ की खेती प्रारम्भ की, जिससे 40 कु. उत्पादन लेकर 1.20 लाख की आय प्राप्त की तथा 2024–25 में 20–25 लाख आय प्राप्त किया।

कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा तकनीकी सहयोग

श्री राम सिंह पटेल जी के अभिनव प्रयास को देखने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र थारियाओं फतेहपुर के वैज्ञानिको ने इनके प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया तथा उनके साथ गाँव को अंगीकृत किया गया तथा खेत पर विविधिकरण किया जिससे खरीफ प्याज़ के साथ मक्का+पपीता की सहफसली खेती, लहसुन की खेती, जैविक गन्ना की खेती प्रारम्भ किया। वर्ष 2022 में सीधे खेत से आन लाइन कार्यशाला भी की गई तथा विभिन्न आयामों से प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं खेत परीक्षण कराये गए।



तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत आय वृद्धि

श्री राम सिंह पटेल 2015 के बाद अपने खेतो में विभन्न फसलों का उत्पादन किया जैसेदृप्याज़, लहसुन, मक्का, सब्जी मटर, गन्ना , धन–गेहूं, जिसमें मुख्य फसल प्याज़ और लहसुन। खरीफ प्याज का 113 कु० प्रति एकड़ उत्पादन लेकर प्रति एकड़ 60000.00 लागत से 4.5 एकड़ में 500 कु० प्याज़ का उत्पादन लेकर 10–15 लाख रु० की शुद्ध आय प्राप्त किया। प्याज़ के अतरिक्त लहसुन,

मटर, तरबूज, परवल, मक्का से कुल आय 20–25 लाख प्राप्त कर रहे हैं। श्री राम सिंह पटेल के खेतो पर इनके सफल अभिनव के प्रयास के देखने हेतु च०शे०आ० कृषि एवं प्रौ० विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति एवं समस्त विभागाध्यक्ष भ्रमण किये। मा० राज्यपाल जी द्वारा सम्मानित किया गया।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गई तकनीकी व क्षेत्र विस्तारः

श्री राम सिंह पटेल के द्वारा खेती में अपनाये गए समस्त अभिनव प्रयास जिसमें खरीफ प्याज़ की खेती की सफल खेती को 200 से अधिक कृषकों ने अपनाया।



कृषक प्रतिक्रियाः

श्री राम सिंह पटेल का कहना है कि खेती में वैज्ञानिक जानकारी अपना कर तथा समय समय पर प्रशिक्षण, प्रदर्शन आदि से जानकारी लेकर खेती करने से लागत कम और आय चार गुना प्राप्त करने में सफलता मिली है जिससे मैंने 6.5 एकड़ खेत भी ख़रीदा हैं और 2 एकड़ के प्याज की बिक्री से नई बोलेरो ख़रीदा है ये कृषकों के लिए सीख हैं।

संतुलित उर्वरकों का प्रयोग, रोग व कीट प्रबन्धन से आय में वृद्धि

कृषक का नाम	:	श्री अमरनाथ
ग्राम	:	डिगसरा
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
शिक्षा	:	स्नातक
जोत	:	2.0 एकड



श्री अमरनाथ एक अग्रणी कृषक हैं जो गांव के अन्य किसानों की ही तरह पुराने बीजों, असंतुलित उर्वरकों का प्रयोग, रोग व कीट प्रबन्धन का अभाव जैसी अनेकों कमियों के साथ फसलों का उत्पादन कर मात्र रू0 108100/– वार्षिक लाभ प्राप्त रहे थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

कृषि विज्ञान केन्द्र गांव से नजदीक होने के कारण उगाई जाने वाली फसलों के वैज्ञानिक तरीकों को प्रशिक्षण तथा जागरूकता कार्यक्रमों से सीखा। नई फसल ग्रीष्म कालीन मूँगफली तथा



घुइयाँ की खेती



मूँगफली

ग्रीष्म कालीन मक्का को अपनाया, गेहूँ तथा आलू की लम्बे समय से उगाई जा रही प्रजातियों के स्थान पर कु0 चिपसोना–1, कु0 पुखराज, कु0 कंचन आदि प्रजातियों को चुना, जड़ सड़न आलू के चेचक और झुलसा रोग का प्रबन्धन किया, भैंस का दूध बढ़ाने व स्वास्थ्य हेतु मिनरल मिक्सचर, संतुलित राशन, टीकाकरण तथा कृत्रिम गर्भाधान को अपनाकर एक ओर फसलों का उत्पादन बढ़ाया तथा दूसरी ओर भैंस से दूध की मात्रा बढ़ाने व नस्ल सुधार का कार्य किया। इसी बीच घुइयाँ की खेती को अपनाकर मुनाफे को बढ़ाया। केन्द्र के सहयोग से केंचुआ पालन, हरी खाद, फसल अवशेष प्रबन्धन, मृदा एवं जल संरक्षण के उपायों को अपनाया। आज गेहूँ की डी0बी0डबलू–187, डी0बी0डब्लू0–303 आलू की कु. पुखराज, कु. गंगा, हाइब्रिड धान, ग्रीष्म कालीन मक्का की डी0के0सी0 9108 प्रजातियाँ उगाकर अन्य कृषकों को भी दे रहे हैं।

तकनीकी हस्तान्तरण से आय में वृद्धिः

वर्ष 2019–20 में इनकी वार्षिक आय रू. 108100/– थी जो नई कृषि तकनीक को अपनाने के बाद रू. 332000/– वर्ष 2024–25 में हो गयी।

अन्य किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीकी

निरन्तर कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े रहने तथा नई–नई तकनीक को अपनाने और उसका लाभ पाने के कारण गांव के अन्य किसान इनका अनुश्रवण लगातार कर रहे हैं और अब तक करीब 500 से अधिक किसानों को लाभान्वित किया है।

परम्परागत खेती के साथ गेहूँ, धान व आलू की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग



कृषक का नाम	:	श्री भगवान दीन
ग्राम	:	डिगसरा
विकास खण्ड	:	जलालाबाद
जनपद	:	कन्नौज
जोत	:	2.0 एकड

श्री भगवानदीन एक प्रगतिशील किसान के रूप में पहचाने जा रहे हैं। ये कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के पूर्व मुख्य रूप से परम्परागत खेती करने के साथ गेहूँ, धान व आलू की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग तो करते थे परन्तु कई वर्षों तक बीजों का बदलाव, बीज शोधन, संतुलित उर्वरक प्रबन्धन आदि न करने के कारण कम उपज से ही संतोष करना पड़ रहा था। इनके पास एक दुधारू भैंस थी जो औसतन 5.5 से 6.0 ली0 प्रति दिन दूध देती थी तथा समय पर गर्भ न धारण करने के कारण भी नुकसान उठाना पड़ता था।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

ग्राम डिगसरा को केन्द्र द्वारा अंगीकृत किये जाने के बाद श्री भगवानदीन से सम्पर्क हुआ और उनके द्वारा अपनाई जा रही तकनीकियों के विश्लेषण के बाद कमियें को दूर करने के लिए अन्य कृषकों के सथ इन्हें भी धान, गेहूँ, मक्का, मूँगफली, आलू तथा पशुओं के पोषण एवं देखभाल पर प्रशिक्षण दिया गया। नवीन प्रजातियों, रोग व कीट प्रबन्धन संतुलित उर्वरक प्रयोग, मिनरल मिक्सचर, मानव स्वास्थ्य आदि विषयों पर प्रार्थना एवं परीक्षण इनके खेतों पर करके तकनीकी के वास्तविक लाभों से अन्य ग्रामीणों सहित अवगत कराया गया। इन्होने इाइब्रिड धान, गेहूँ तथा आलू की नई प्रजातियों, मूँगफली के बीजों तथा भूमि के उपचार व सूक्ष्म तत्वों के प्रयोग, हरी खाद, फसल अवशेष प्रबन्धन, पशु पोषण को अपनाकर फसलों के उत्पादन में आथातीत वृद्धि दर्ज की।

श्री भगवानदीन जी का दूसरा पड़ाव था बीजों का उत्पादन, इन्होंने गेहूँ और आलू की नई प्रजातियों के बीजों को उगाकर अन्य किसानों को गेहूँ रू. 5.00 प्रति किग्रा0 तथा आलू रू. 300–500 प्रति कु. की दर से अधिक दामों पर बेंचना शुरू कर दिया।



घुइयाँ की खेती



मूँगफली



इाइब्रिड धान

तकनीकी हस्तान्तरण से आय में वृद्धि

वर्ष 2016–17 में रू0 115600.00 वार्षिक आय थी जो तकनीक के प्रथम चरण में रू. 251300.00 हो गई बीज उत्पादन के बाद अब 2024–25 में रू0 371800.00 कमा रहे हैं।

अन्य किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीकी– कृषि तकनीकी प्रचार–प्रसार के अग्रदूत, गांव और आसपाल के किसानों के लिए प्रेरणा श्रोत तथा बीज व तकनीकी प्रदाता है और प्रतिवर्ष सौकड़ों कृषकों तक बीज एवं तकनीक के माध्यम से अपनी पहुँच बना रखी है।

ड्रोन द्वारा पोषक तत्वों एवं कीटनाशकों का छिड़काव एवं आर्थिक समृद्धि



नाम	:	श्रीमती सविता यादव
पति का नाम	:	श्री सौरभ सिंह
ग्राम	:	हरनागरपुर
विकास खण्ड	:	मैनपुरी
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	9675856258

श्रीमती सविता यादव वर्ष 2024 के पूर्व अपने पति एवं परिवार के साथ खेती में सहयोग करती थी। उनकी व्यक्तिगत आय लगभग शून्य थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण



अप्रैल 2024 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के द्वारा कृषि संखियों को ''जैविक खेती'' विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया था। इस प्रशिक्षण में उर्वरकों का प्रयोग एवं ''जैविक खेती'' प्रमुख विषय थे। 09 जनवरी 2024 को हैदराबाद ''ड्रोन दीदी योजना'' के अन्तर्गत कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से हैदराबाद मे 15 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में ड्रोन द्व ारा उर्वरकों एवं रसायनिक दवा के छिड़काव प्रमुख विषय थे।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरण

तकनीकी हस्तान्तरण के पश्चात श्रीमती सविता यादव ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग से 30 जनवरी 2024 से अब तक कुल 08 जिलों के 175 गॉवों के लगभग 1292 एकड़ की खड़ी फसलों में उर्वरकों एव कीटनाशकों का छिड़काव किया है। इस क्रम में इन्होंने अब तक रू0 516800.00 की शुद्ध आय प्राप्त की है।





अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

ड्रोन द्वारा कम समय, कम खर्चे एव अच्छा छिड़काव होने के कारण अबतक कुल 410 कृषकों ने ड्रोन द्वारा छिड़काव कराया। इस कार्य को देखकर जनपद में अब तक 5 कृषक/महिला कृषकों के द्वारा इस कार्य को अपनाया है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्रीमती सविता यादव ने ड्रोन द्वारा उर्वरकों एव कीटनाशकों के छिड़काव को अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में अपना लिया है। श्रीमती सविता यादव अपने इस व्यवसाय से प्राप्त आय के कारण जनपद में ''लखपति दीदी'' में चयन हुआ है। श्रीमती सविता यादव इस सम्मान को पाकर खुश हैं।

ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं कीटनाशकों का छिड़काव

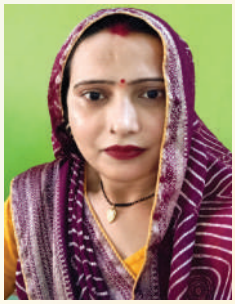

नाम	:	श्रीमती देवकी राजपूत
पति का नाम	:	श्री प्रवीन कुमार
ग्राम	:	राजपुरा
विकास खण्ड	:	मैनपुरी
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	9045709016

श्रीमती देवकी राजपूत वर्ष 2024 के पूर्व अपने पारिवाकिक छोटे से भूखण्ड पर सब्जियों की खेती करती थीं। उनकी व्यक्तिगत आय अत्यधिक कम थी तथा परिवार का भरण–पोषण मुश्किल से हो पाता था।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

अप्रैल 2024 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के द्वारा कृषि संखियों को ''जैविक खेती'' विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया था। इस प्रशिक्षण में उर्वरकों का प्रयोग एवं ''जैविक खेती'' प्रमुख विषय थे। 09 जनवरी 2024 को हैदराबाद ड्रोन दीदी योजना के अन्तर्गत हैदराबाद मे 15 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं रसायनिक दवा के छिड़काव प्रमुख विषय थे।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरण

तकनीकी हस्तान्तरण के पश्चात श्रीमती देवकी राजपूत ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग से 30 जनवरी 2024 से अब तक मैनपुरी जनपद के कुल 50 गॉवों के लगभग 800 एकड़ की खड़ी फसलों में घुलनशील उर्वरकों एव पेस्टीसाइड का छिड़काव कर चुकी है। इस क्रम में इन्होंने अब तक रू0 320000.00 की शुद्ध आय प्राप्त की है।



अन्य कषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

ड्रोन द्वारा कम समय, कम खर्चे एव अच्छा छिड़काव होने के कारण अबतक कुल 335 कृषकों ने ड्रोन द्वारा छिड़काव कराया। इस कार्य से प्रेरित हो कर जनपद में अब तक 9 कृषक/महिला कृषकों के द्वारा इस कार्य को अपनाया है।

कृषक प्रतिकिया

श्रीमती देवकी राजपूत ने ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं कीटनाशकों के छिड़काव को अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में अपना लिया है। इनको इस व्यवसाय से प्राप्त आय के कारण जनपद में ''लखपति दीदी'' में चयन हुआ है। श्रीमती देवकी राजपूत इस सम्मान को पाकर खुश है।

वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन एवं जैविक खेती



नाम	:	श्री राम औतार लोधी
पिता का नाम	:	श्री शैतान सिंह
ग्राम	:	भदौरा
विकास खण्ड	:	सुल्तानगंज
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	9720427691

श्री राम औतार लोधी, ग्राम भदौरा वि0 ख0 सुल्तानगंज, मैनपुरी ने वर्ष 2018 में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीकी पर कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी मे प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात 1 भैंस से वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन करना प्रारम्भ किया था। उस समय इनको प्रतिवर्ष रू0 20000.00 शुद्ध आय प्राप्त हो रही थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

अगस्त 2018 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के द्वारा 5 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया था। जिसमें वर्मी कम्पोस्ट बनाने, पैकिंग एव उसके प्रयोग पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया था।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग श्री राम औतार लोधी आज अपना व्यवसाय दूग्ध उत्पादन के साथ–साथ वर्मी कम्पोस्ट को बनाकर पैकिंग कर अपने ब्रॉण्ड नाम के साथ बिक्री करते हैं। वर्तमान में 4 पशुओं (2 भैंस एव 2 गायों) के साथ पूरे गोबर का वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन का कार्य करते है, जिससे उनकी आय वर्तमान में रू0 290000.00 की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री राम औतार जी से प्रेरित हो कर लगभग 20 लोगों ने अपने वर्मी कम्पोस्ट यूनिट तैयार कर ली है। श्री राम औतार जी ने अब तक 950 से अधिक कृषक/महिला कृषकों को प्रशिक्षित भी किया है।





कृषक प्रतिक्रिया

श्री राम औतार जी अपने परिवार के साथ मिल कर जैविक सब्जियों, फल एवं जैविक अनाज का उत्पादन कर अतिरिक्त आय प्राप्त करतें हैं और बचत भी करतें हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी से जुड़ कर श्री राम औतार जी काफी खुश हैं।

पशुपालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन



नाम	:	श्री उदयवीर सिंह
पिता का नाम	:	श्री माता दीन
ग्राम	:	पाल
विकास खण्ड	:	सुल्तानगंज
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	9412148916

श्री उदयवीर सिंह, ग्राम–पाल, वि0ख0–सुल्तानगंज, मैनपुरी, वर्ष 2018 के पूर्व खेती के साथ 1 देशी गाय (हरियाणा ब्रीड) का पालन करते थे। जिसे उनको प्रतिवर्ष लगभग रू0 10000.00 शुद्ध आय प्राप्त होती थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री उदयवीर जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग से पशुपालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन का 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात् अपना कार्य प्रारम्भ किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरणः



श्री उदयवीर जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी से प्राप्त प्रशिक्षण के उरान्त अपनी देशी गाय को कृत्रिम गर्भाधान विधि द्वारा होल्स्टीन फ्रीजियन से क्रास करा कर अब तक 8 दुधारू गायों को तैयार कर प्रति गाय औसत रू0 30000.00/गाय बेंच कर लगभग रू0 240000.00 की शुद्ध आय प्राप्त किया। वर्तमान में श्री उदयवीर जी के पास उन्नत नस्ल की 4 गायें हैं। दूध बिक्री के रूप में श्री उदयवीर को सालाना रू0 146000.00 की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।



गायों के गोबर को वर्मी कम्पोस्ट में बदल कर लगभग रू. 90000.00 वार्षिक आय प्राप्त कर रहे है। इस तरह से श्री उदयवीर सिंह जी पशुपालन एवं वर्मी कम्पोस्ट से वार्षिक रू. 236000.00 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं।

अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री उदयवीर सिंह जी की सफलता से प्रेरित हो कर लगभग 10 कृषक नस्ल सुधार एव पशुपालन के साथ वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन यूनिट लगा कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर रहे है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री उदयवीर सिंह जी अतिरिक्त आय प्राप्त कर अपने परिवार का जीवन स्तर सुधार कर इस तकनीकी से खुश हैं।

कृषि विविधीकरण एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन



नाम	:	श्री देवेन्द्र सिंह
पिता का नाम	:	श्री राम लाल
ग्राम	:	बड़ेपुर
विकास खण्ड	:	बेवर
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	9412893628

श्री देवेन्द्र सिंह, ग्राम–बड़ेपुर वि0ख0–बेवर, मैनपुरी वर्ष 2013 के पूर्व कुछ फसलों के साथ आलू, लहसुन, गेहूँ इत्यादि की खेती अपने 3.6 हे. जमीन पर करते थे। उस समय उनकी वार्षिक आय लगभग रू. 300000.00 थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

श्री देवेन्द्र सिंह जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग से कृषि विविधीकरण, पशुपालन एवं वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरण



श्री देवेन्द्र सिंह जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी से प्राप्त प्रशिक्षण के उरान्त अपने खेतों में कृषि विविधीकरण को अपनाया जिसमें वह पशुपालन के साथ–साथ फलों, फूलों, सब्जियों और अनाज जैसे मक्का, गेहूँ की खेती कर रहे हैं। श्री देवेन्द्र सिंह अपने पशुओं से प्राप्त सम्पूर्ण गोबर को अपने यहां पर स्थापित वर्मी कम्पोस्ट इकाई के माध्यम से वर्मी कम्पोस्ट खाद मे बदल कर अपनी फसलों पर प्रयोग करते है।

वर्तमान में श्री देवेन्द्र सिंह जी अपने प्रक्षेत्र से लगभग रू. 10 से 11 लाख वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं।





अन्य कषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

श्री देवेन्द्र सिंह जी की सफलता से प्रेरित हो कर सैकड़ों कृषकों ने इनके माडल को अपनाने का प्रयास किया है।

कृषक प्रतिक्रिया

श्री देवेन्द्र सिंह जी कृषि विविधीकरण एवं जैविक खेती को अपना कर अपने परिवार को स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। श्री देवन्द्र सिंह जी कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी से जुड़ कर बहुत खुश हैं।

ड्रोन द्वारा पोषक तत्वो एवं कीटनाशकों का छिड़काव



नाम	:	श्रीमती सुनीता कश्यप
पति का नाम	:	श्री बिजेन्द्र सिंह
ग्राम	:	लहरा
विकास खण्ड	:	मैनपुरी
जनपद	:	मैनपुरी
मोबाइल नम्बर	:	7248772668

श्रीमती सुनीता कश्यप वर्ष 2024 के पूर्व अपने अपने पति एवं परिवार के साथ खेती मे सहयोग करती थी। उनकी परिवार की आय लगभग शून्य थी।

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तकनीकी हस्तान्तरण

मार्च 2024 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के द्वारा कृषि सखियों को ''जैविक खेती'' विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया था। इस प्रशिक्षण में उर्वरकों का प्रयोग एवं ''जैविक खेती'' प्रमुख विषय थे। 09 जनवरी 2024 को हैदराबाद ड्रोन दीदी योजना के अन्तर्गत हैदराबाद मे 15 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं रसायनिक दवा के छिड़काव प्रमुख विषय थे।



तकनीकी हस्तान्तरण के बाद आय–व्यय का विवरण

तकनीकी हस्तान्तरण के पश्चात श्रीमती सुनीता कश्यप ने कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के तकनीकी सहयोग से 30 जनवरी 2024 से अब तक मैनपुरी जनपद के कुल 30 गॉवों के लगभग 600 एकड़ के खड़ी फसलों में उर्वरकों एवं पेस्टीसाइड का छिड़काव कर चुकी हैं। इस क्रम में इन्होने अब तक रू0 240000.00 की शुद्ध आय प्राप्त की है।



अन्य कृषकों द्वारा अपनायी गयी तकनीकी/क्षेत्र विस्तार

ड्रोन द्वारा कम समय, कम खर्चे एवं अच्छा छिड़काव होने के कारण अब तक कुल 220 कृषकों ने ड्रोन द्वारा छिड़काव कराया। इनके कार्य को देख कर जनपद में अब तक 4 कषक/महिला कृषकों के द्वारा इस तकनीकी को अपनाया है।

कृषक प्रतिक्रियाः

श्रीमती सुनीता कश्यप ने ड्रोन द्वारा उर्वरकों एवं पेस्टीसाइड के छिड़काव को अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में अपना लिया है।

श्रीमती सुनीता कश्यप अपने इस व्यवसाय से प्राप्त आय के कारण उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है।

पोषण वाटिका से पोषण सुरक्षा एवं अतिरिक्त आय

लाभार्थी का नाम	:	श्रीमती सुदामा देवी
पति का नाम	:	श्री प्रेम कुमार
ग्राम	:	लुधौइखेड़ा
विकास खण्ड	:	बछरावां
जनपद	:	रायबरेली
पोषण वाटिका का क्षेत्रफल	:	200 वर्गमीटर

श्रीमती सुदामा देवी ग्राम लुधौइखेड़ा, विकास खण्ड बछरावां, जनपद रायबरेली की निवासी हैं। उनके पति का नाम श्री प्रेम कुमार है। परिवार की दैनिक पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने तथा घर पर ताजी, सुरक्षित एवं विविध प्रकार की सब्जियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उन्होंने अपने घर के आसपास उपलब्ध भूमि का उपयोग पोषण वाटिका के रूप में करना प्रारंभ किया।

कृषि विज्ञान केंद्र के तकनीकी मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से श्रीमती सुदामा देवी ने लगभग 200 वर्गमीटर क्षेत्रफल में पोषण वाटिका को व्यवस्थित रूप से विकसित किया। आज यह पोषण वाटिका उनके परिवार की पोषण सुरक्षा के साथ–साथ घरेलू आय एवं बचत का भी एक उपयोगी साधन बन गई है।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तकनीकी हस्तक्षेप

वर्ष 2024–25 में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा श्रीमती सुदामा देवी को पोषण वाटिका स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा विभिन्न सब्जियों के बीज उपलब्ध कराए गए। इसके साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित पोषण जागरूकता अभियान के माध्यम से संतुलित आहार, विविधतापूर्ण भोजन, हरी एवं मौसमी सब्जियों के महत्व तथा परिवार के पोषण में पोषण वाटिका की भूमिका के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा उन्हें पोषण वाटिका के लिए उपयुक्त फसलों के चयन, मौसम के अनुसार सब्जियों की बुवाई, बीज एवं पौधों की देखभाल, जैविक एवं स्थानीय संसाधनों के उपयोग, सिंचाई, खरपतवार प्रबंधन तथा समय–समय पर सब्जियों की तुड़ाई के संबंध में तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

तकनीकी मार्गदर्शन एवं उपलब्ध कराए गए बीजों का उपयोग करते हुए श्रीमती सुदामा देवी ने उपलब्ध भूमि को व्यवस्थित रूप से उपयोग में लाकर एक विविधतापूर्ण पोषण वाटिका विकसित की।

पोषण वाटिका का विकास एवं तकनीकी हस्तांतरण

वाटिका में मौसम के अनुसार विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। इससे परिवार को वर्ष के विभिन्न समयों में घर पर ही ताजी एवं पौष्टिक सब्जियाँ उपलब्ध होने लगीं।

पहले जहाँ परिवार को अपनी आवश्यकता की सब्जियों के लिए बाजार पर अधिक निर्भर रहना पड़ता था, वहीं पोषण वाटिका विकसित होने के बाद दैनिक उपयोग की अनेक सब्जियाँ घर से ही प्राप्त होने लगीं। इससे बाजार से सब्जियाँ खरीदने पर होने वाले व्यय में कमी आई तथा परिवार के भोजन में ताजी सब्जियों का नियमित समावेश संभव हुआ।

तकनीकी हस्तांतरण के उपरांत प्रभावः

पोषण वाटिका से लगभग 750–770 किलोग्राम विभिन्न सब्जियों का वार्षिक उत्पादन प्राप्त हो रहा है। उत्पादित सब्जियों का अधिकांश भाग परिवार के स्वयं के उपभोग में प्रयोग किया जाता है, जबकि अतिरिक्त उत्पादन को स्थानीय स्तर पर उपयोग एवं बिक्री के माध्यम से आर्थिक लाभ में परिवर्तित किया जाता है।

अनुमानतः लगभग 200–250 किलोग्राम अतिरिक्त सब्जियों के विक्रय से ₹ 6,000–8,000 प्रतिवर्ष की अतिरिक्त आय प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त, घर में उत्पादित सब्जियों के उपयोग से बाजार से सब्जियाँ खरीदने पर लगभग ₹ 15,000–18,000 प्रतिवर्ष की बचत होने का अनुमान है।

इस प्रकार कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी हस्तक्षेप से विकसित 200 वर्गमीटर की पोषण वाटिका ने परिवार को पोषण सुरक्षा, घरेलू खर्च में बचत तथा अतिरिक्त आय–तीनों स्तरों पर लाभ प्रदान किया है।

अन्य महिलाओं द्वारा तकनीक अपनाना एवं क्षेत्र विस्तार

श्रीमती सुदामा देवी की पोषण वाटिका स्थानीय स्तर पर अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी है। 200 वर्गमीटर क्षेत्र में विभिन्न सब्जियों का उत्पादन तथा परिवार की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति को देखते हुए अन्य महिलाओं में भी घर के आसपास उपलब्ध भूमि का उपयोग पोषण वाटिका के रूप में करने के प्रति रुचि एवं जागरूकता बढ़ी है।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित पोषण जागरूकता अभियानों के माध्यम से पोषण वाटिका, संतुलित आहार, मौसमी सब्जियों के उपयोग एवं घरेलू पोषण सुरक्षा का संदेश अन्य ग्रामीण परिवारों तक भी पहुँचाया गया।

कृषक प्रतिक्रिया

श्रीमती सुदामा देवी के अनुसार, कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा उपलब्ध कराए गए सब्जियों के बीज, तकनीकी मार्गदर्शन एवं पोषण जागरूकता से उन्हें अपने घर पर पोषण वाटिका विकसित करने में

काफी सहायता मिली। अब परिवार को घर पर ही ताजी एवं पौष्टिक सब्जियाँ उपलब्ध हो रही हैं। इससे बाजार से सब्जियाँ खरीदने का खर्च कम हुआ है तथा अतिरिक्त सब्जियों का उपयोग स्थानीय स्तर पर बिक्री के लिए भी किया जा रहा है।

उनके अनुसार, "पोषण वाटिका ने हमारे घर की खाली पड़ी भूमि को उपयोगी बना दिया है। अब घर की ताजी सब्जियाँ हमारे परिवार के भोजन का हिस्सा हैं और अतिरिक्त उत्पादन से कुछ आय भी प्राप्त हो जाती है।" यह पहल इस बात को प्रदर्शित करती है कि छोटे क्षेत्रफल में वैज्ञानिक एवं विविधतापूर्ण सब्जी उत्पादन अपनाकर ग्रामीण परिवार अपने पोषण स्तर को बेहतर करने के साथ–साथ घरेलू आय एवं बचत में भी वृद्धि कर सकते हैं।





कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक द्वारा लाभार्थी श्रीमती सुदामा देवी की 200 वर्गमीटर पोषण वाटिका का निरीक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन

रंगीला महिला समूह ने मसाला प्रसंस्करण से बढ़ाई आय और आत्मनिर्भरता

समूह का नाम	:	रंगीला महिला समूह
ग्राम	:	इसिया
विकास खण्ड	:	बछरावां
जनपद	:	रायबरेली
गतिविधि	:	मसाला प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन

महिला समूह का परिचय

ग्राम इसिया, विकास खण्ड बछरावां, जनपद रायबरेली की रंगीला महिला समूह ग्रामीण महिलाओं का एक सक्रिय समूह है। समूह की महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ–साथ कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियों में भी योगदान देती हैं। अपनी आय में वृद्धि तथा स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर विकसित करने के उद्देश्य से समूह की महिलाओं ने खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन की गतिविधि अपनाने में रुचि दिखाई।

कृषि विज्ञान केंद्र के तकनीकी मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त रंगीला महिला समूह की महिलाओं ने मसाला प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन को आय सृजन की गतिविधि के रूप में अपनाया। इस पहल के माध्यम से समूह ने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मसालों को स्वच्छ एवं वैज्ञानिक तरीके से प्रसंस्कृत कर बाजार योग्य उत्पाद तैयार करने की दिशा में कदम बढ़ाया।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा रंगीला महिला समूह की महिलाओं को मसाला प्रसंस्करण, खाद्य स्वच्छता, कच्चे माल की सफाई, सुखाने, ग्रेडिंग, पीसने, मिश्रण, पैकेजिंग, लेबलिंग एवं भंडारण की वैज्ञानिक तकनीकों के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को विभिन्न प्रकार के मसाला उत्पाद तैयार करने की जानकारी प्रदान की गई, इसके साथ ही समूह की महिलाओं को उत्पादन लागत की गणना, लाभ निर्धारण, उत्पाद की कीमत तय करना, आकर्षक पैकेजिंग, लेबलिंग तथा स्थानीय स्तर पर विपणन के संबंध में भी व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

तकनीकी ज्ञान का प्रयोग

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद रंगीला महिला समूह की सदस्यों ने मसाला प्रसंस्करण का कार्य सामूहिक रूप से प्रारंभ किया। समूह द्वारा अच्छी गुणवत्ता वाले मसालों का चयन कर उनकी सफाई

एवं छंटाई की जाती है। इसके बाद आवश्यकतानुसार मसालों को सुखाकर वैज्ञानिक विधि से पीसा जाता है।

तैयार मसालों को स्वच्छ एवं खाद्य–ग्रेड पैकेजिंग सामग्री में निर्धारित मात्रा में पैक किया जाता है। पैकेट की उचित सीलिंग एवं लेबलिंग पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता एवं आकर्षक प्रस्तुति बनी रहे।

इस प्रकार समूह की महिलाओं ने पारंपरिक रूप से घर में उपयोग किए जाने वाले मसालों को मूल्यवर्धित एवं बाजार योग्य उत्पाद के रूप में विकसित करने का प्रयास किया।

तकनीकी हस्तान्तरण के पश्चात आय–व्यय का विवरण

तकनीकी प्रशिक्षण से पहले समूह की महिलाओं द्वारा मसालों का उपयोग मुख्य रूप से घरेलू आवश्यकताओं तक सीमित था। KVK के प्रशिक्षण के बाद समूह ने मसालों के प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग को आय सृजन के अवसर के रूप में अपनाया। प्रारंभिक स्तर पर अनुमानतः रंगीला महिला समूह द्वारा लगभग 100–120 किलोग्राम विभिन्न मसाला उत्पादों का प्रतिमाह प्रसंस्करण एवं विपणन किया जा रहा ळें औसतन ₹ 180–220 प्रति किलोग्राम के बिक्री मूल्य के आधार पर लगभग ₹ 20,000–25,000 प्रतिमाह का सकल कारोबार होने का अनुमान ळें कच्चे माल, पैकेजिंग, बिजली, परिवहन एवं अन्य संचालन व्यय को घटाने के बाद समूह को लगभग ₹ 7,000–10,000 प्रतिमाह का अनुमानित शुद्ध लाभ प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार मसाला प्रसंस्करण गतिविधि से समूह को लगभग ₹ 84,000–1,20,000 प्रतिवर्ष का अनुमानित शुद्ध आर्थिक लाभ प्राप्त होने की संभावना है।

महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण पर प्रभाव

मसाला प्रसंस्करण गतिविधि ने रंगीला महिला समूह की सदस्यों को घर के आसपास रहकर स्वरोजगार एवं आय सृजन का अवसर प्रदान किया है। समूह की महिलाओं में अब केवल उत्पाद तैयार करने का कौशल ही नहीं, बल्कि लागत एवं लाभ की गणना, उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग, मूल्य निर्धारण, विपणन एवं सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित हुई है।

बाजार एवं विपणन

समूह द्वारा तैयार मसालों की बिक्री प्रारंभिक स्तर पर ग्राम एवं आसपास के स्थानीय बाजार, परिचित परिवारों, स्वयं सहायता समूह की बैठकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों, मेलों तथा स्थानीय आयोजनों के माध्यम से की जा रही है।

भविष्य में उत्पादों की बिक्री को स्थानीय किराना दुकानों, हाट–बाजारों, प्रदर्शनियों तथा अन्य ग्रामीण विपणन माध्यमों तक विस्तारित किया जा सकता है।

रंगीला महिला समूह की महिलाओं के अनुसार, कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिए गए प्रशिक्षण से उन्हें मसालों की वैज्ञानिक विधि से सफाई, सुखाने, पीसने, पैकेजिंग एवं लागत निर्धारण की जानकारी मिली।

कृषि विज्ञान केंद्र से प्रशिक्षण मिलने के बाद हमें मसालों को प्रसंस्कृत करके पैक करने तथा बाजार में बेचने की जानकारी मिली। अब हम सामूहिक रूप से मसाला उत्पाद तैयार कर रहे हैं और इससे समूह की आय बढ़ाने का अवसर मिला है।"

निष्कर्ष

कृषि विज्ञान केंद्र के तकनीकी हस्तक्षेप से रंगीला महिला समूह, ग्राम इसिया, विकास खण्ड बछरावां, जनपद रायबरेली द्वारा अपनाई गई मसाला प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन गतिविधि ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार एवं आय सृजन का उपयोगी माध्यम बन रही है।







''रंगीला महिला समूह की सदस्यों द्वारा तैयार किया गया मसाला उत्पाद के पैकेजिंग का प्रदर्शन''



प्रसार निदेशालय

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर